SAPTHAGIRI (HINDI)
ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:53, Issue: 3
August-2022, Price Rs.5/-.
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

# सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

अगस्त-2022

रू.5/-

कृष्णाष्टमी

दि. 19-08-2022

# तिरुमल तिरुपति देवस्थान

आंध्र प्रदेश राज्य के तिरुपति नगर के निकट पातकाल्वा (पेरूरु) गाँव में ति.ति.दे. के द्वारा जीर्णोद्धारित श्री वकुला माता मंदिर के महासंप्रोक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत जलाधिवास, क्षीराधिवास, विष्वक्सेन पूजा, पुण्याहवचन, अग्निप्रज्वलन, कलशाराधन, विशेष होम आदि अनेक वैदिक कार्यक्रमों के बाद मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा, महासंप्रोक्षण कार्यक्रम को शास्त्रोक्त ढंग से आयोजित किया गया है। इस संदर्भ में आं.प्र. राज्य के मुख्यमंत्री माननीय श्री वाई.एस.जगनमोहन रेड्डी जी, आं.प्र. राज्य के मंत्रीवर्य श्री पेद्दिरेड्डी रामचंद्रा रेड्डी जी, आं.प्र. राज्य के एम.पी. श्री पी.वी.मिथुन रेड्डी जी, ति.ति.दे. के ई.ओ. श्री ए.वी.धर्मारेड्डी जी, आई.डी.ई.एस., तिरुपति जे.ई.ओ. श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., श्रीमती सदा भार्गवी, आई.ए.एस., और अन्य उच्च पदाधिकारीगण ने भाग लिया।

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान्।
स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव॥

*(- श्रीमद्भगवद्गीता १-३७)*



अतएव हे माधव! अपने ही बान्धव धृतराष्ट्र के पुत्रों को मारने के लिए हम योग्य नहीं है, क्यों कि अपने ही कुटुम्ब को मारकर हम कैसे सुखी होंगे?

गीतायाः श्लोक दशकं सप्त पञ्च चतुष्टयम्।
त्रिद्वयेक मेक मर्धं वा श्लोकानां यः पठेन्नरः
चन्द्रलोक मवाप्नोति वर्षाणामयुतं तथा।

(- गीता मकरंद, गीता की महिमा)

जो मनुष्य गीता के दस या सात या पांच या चार या तीन या दो या एक या आधे श्लोक का नित्य पाठ करेगा वह दस हजार वर्ष चन्द्रलोक में वास करेगा।

# तिरुमल
# श्री वेंकटेश्वरस्वामी जी का ब्रह्मोत्सव
## 2022 सितंबर 27 से अक्तूबर 05 तक

**27-09-2022**
**मंगलवार**
दिन - ध्वजारोहण
रात - महाशेषवाहन

**28-09-2022**
**बुधवार**
दिन - लघुशेषवाहन
रात - हंसवाहन

**29-09-2022**
**गुरुवार**
दिन - सिंहवाहन
रात - मोतीवितानवाहन

**30-09-2022**
**शुक्रवार**
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - सर्वभूपालवाहन

**01-10-2022**
**शनिवार**
दिन - पालकी में आरुढ़
मोहिनी अवतारोत्सव
रात - गरुडसेवा

**02-10-2022**
**रविवार**
दिन - हनुमन्तवाहन
सायं - वसंतोत्सव
रात - गजवाहन

**03-10-2022**
**सोमवार**
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

**04-10-2022**
**मंगलवार**
दिन - रथ-यात्रा
रात - अश्ववाहन

**05-10-2022**
**बुधवार**
दिन - चक्रस्नान
रात - ध्वजावरोहण

# सप्तगिरि

## तिरुमल तिरुपति देवस्थान की सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥


**वर्ष-५३ अगस्त-२०२२ अंक-०३**


### विषयसूची


| | | |
|---|---|---|
| वरलक्ष्मी व्रत से धन संपदा और मंगल वरदान की प्राप्ति | श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालीया | 07 |
| तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी) | प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव | |
| | प्रो.गोपाल शर्मा | 10 |
| सुकन्या | डॉ.के.एम.भवानी | 14 |
| श्री वेंकटाचल की महिमा | आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी | 16 |
| बलराम जयंती | डॉ.एच.एन.गौरीराव | 19 |
| शरणागति मीमांसा | श्री कमलकिशोर हि. तापडिया | 24 |
| गणपति बप्पा मोरिया | कुमारी बी.आर.गरिमा राव | 31 |
| भृगु महर्षि | डॉ.जी.सुजाता | 37 |
| मंगलाशासन आल्वार-पाशुरम् | श्री के.रामनाथन | 39 |
| श्री चेन्नकेशवस्वामी जी का मंदिर, ताल्लपाका | डॉ.आई.एल.एन.चंद्रशेखर राव | 41 |
| श्री प्रपन्नामृतम् | श्री रघुनाथदास रान्दड | 44 |
| गाय का दूध | डॉ.सुमा जोषि | 46 |
| आइये, संस्कृत सीखेंगे...!! | डॉ.सी.आदिलक्ष्मी | 48 |
| अगस्त महीने का राशिफल | डॉ.केशव मिश्र | 49 |
| नीतिकथा - आशीर्वाद का प्रभाव | श्रीमती के.प्रेमा रामनाथन | 50 |
| क्विज | | 51 |
| चित्रकथा - चौथी का चाँद देखने से... | डॉ.एम.रजनी | 52 |


website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org


*गौरव संपादक*
श्री ए.वी.धर्मारिड्डी, आई.डी.ई.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी(एफ.ए.सी), ति.ति.दे.

*प्रधान संपादक*
डॉ.के.राधारमण

*संपादक*
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

*उपसंपादक*
श्रीमती एन.मनोरमा

*मुद्रक*
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

*स्थिरचित्र*
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशी वार्षिक चंदा .. रु.850-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.


मुखचित्र - नवनीत कृष्णा, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ - माँ वरलक्ष्मी देवी। (चित्रकार - श्री पी.शिवप्रसाद)

**सूचना**
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।
*- प्रधान संपादक*

संपादकीय

# सावन मास का वैभव

काल व समय ईश्वर प्रदत्त है। काल सतत प्रवाहमान है। ईश्वर की कृपा से काल चक्र के बारे में और देवताओं के काल के बारे में मनुष्य ने ज्ञान प्राप्त किया है। काल मान मनुष्य और देवताओं के लिए अलग-अलग है। देवताओं की गतिविधियों को आधार बनाकर मनुष्य ने स्थूल रूप में वर्ष को दो भागों में विभक्त कर लिया है। उत्तरायन और दक्षिणायन। दोनों ईश्वराराधना की दृष्टि से पवित्र और मंगलमय है। फिर मनुष्य ने इन को अनेक मासों, वारों और दिनों में विभाजन कर लिया है। साथ ही इस पूरे काल में किस प्रकार का पूजा-पाठ और विशेष रूप से किस देवता का पूजा-पाठ करना चाहिए, ऐसी रीति-रिवाज बनी हैं।

दक्षिणायन काल में आनेवाले महिमान्वित महीनों में ''श्रावण मास'' भी एक है। श्रवणा नक्षत्र युक्त चंद्रमा के प्रवेश से इस का नाम 'श्रावण मास' रखा गया है। विशेष बात यह है कि श्री वेंकटेश्वर भगवान जन्म नक्षत्र भी 'श्रवणा नक्षत्र' है। यह देवी माँ के लिए भी अत्यंत प्रीति कारक मास है। इसके अतिरिक्त भगवान शिव को भी बहुत प्रिय मास है। शिव भक्तों के लिए सावन का सोमवार व्रत विशेष महत्व रखता हैं। सावन में प्रकृति खिलती-निखरती है। क्योंकि समस्त जीव-जंतुओं का प्राणाधार जल है। और वह जल धरती पर वर्षा के रूप में इसी महीने में अधिक गिरता है। पूरी प्रकृति हरी भरी हरियाली से भर जाती है। इस हरियाली से ही मनुष्य के जीवन में प्राण तत्व और नया उत्साह पैदा होता है। यह कई पर्वों का काल भी है।

वरुण देव की कृपा से प्राप्त होनेवाले इस विशेष क्रिया केलिए मनुष्य सदा उन का आभार होते ही हैं साथ ही इसी अवसर पर अनेक देवी-देवताओं के विशेष पूजा-पाठ का आयोजन भी करते हैं। श्रावण मास के हरेक मंगलवार के दिन मंगलगौरी व्रत, हरेक शुक्रवार के दिन वरलक्ष्मी व्रत करना विवाहित महिलाओं के लिए पुण्यदायक और विशेष फलदायक माना जाता है। साथ ही साथ इस महीने में भी राखी पूर्णिमा, विखनस महामुनि जयंती, हयग्रीव जयंती, गोकुलाष्टमी, बलराम जयंती, वराह जयंती जैसे जयंत्योत्सव, पूजा कैंकर्य किए जाते हैं।

शास्त्रों के अनुसार श्रावण पूर्णिमा के दिन नव-जनेऊ (उपनयन) धारण करते हैं, इसके मनाने की रीति, पद्धति में अलगांव होने पर भी मूल भावना में कोई अंतर नहीं है। यह पर्व मुख्य रूप से आत्म शुद्धि और निष्ठावान जीवन के लिए ही सब जगह मनाया जाता है।

इतने महिमान्वित श्रावण मास में कई देवी-देवताओं के जयंति-उत्सवों के साथ-साथ अनेक व्रत, एकादशी पूजा आदि के साथ निजगृहों में तथा मंदिरों में धूम-दाम से षोडशोपचार पूजाएँ की जाती हैं। हिंदु धर्म की रीति-रिवाजों का पालन करते हुए पूरी भक्ति के साथ लोग भक्ति भाव में डुबे रहते हैं। यह उपवास आदि शुभ कर्म करके भगवान को प्रसन्न करके अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति करने का सुअवसर श्रावण मास है।

भगवान श्री वेंकटेश्वर के जन्म नक्षत्र युक्त इस मास में करने वाले सारे पूजा-कैंकर्य, दान, उपवास, सेवाएँ, पूजाएँ और व्रत आदि विशेष फल देती हैं साथ ही सदा देवी माँ की कृपा भी प्राप्त होती है।

**लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु।**

# वरलक्ष्मी व्रत से धन संपदा और मंगल वरदान की प्राप्ति

- श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालीया
मोबाइल - 9825113636

जीवन में सुख, संपत्ति समृद्धि और शांति प्राप्त करने के लिए ईश्वर की कृपा होना बहुत जरूरी है। जब हमारे कर्म और धर्म ईश्वर के प्रति हो तो हमारा जीवन बहुत ही अच्छा चलता है। सभी प्रकार के सुख हमको महालक्ष्मी जी की असीम कृपा से प्राप्त होते हैं। ईश्वरीय वरदान और कृपा प्राप्त करने के लिए हमारे वेद और पुराणों ने बहुत सारे व्रत बताया है। उन व्रतों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण ''वरलक्ष्मी व्रत'' भी एक है।

वरलक्ष्मी व्रत से मानव को दैहिक, भौतिक और मानसिक सब प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं।

## वरलक्ष्मी का अर्थ

''वर'' याने वरदान और ''लक्ष्मी'' याने सुख, संपत्ति... अर्थात् जिस से वरदान के साथ-साथ धन-संपदा प्राप्त होती है यही ''माँ वरलक्ष्मी।''

## वरलक्ष्मी की उत्पत्ति कथा

देव और दानव के बीच भीषण युद्ध हुआ। इसके बाद दोनों ने समुद्र मंथन किया। इसमें से कई सारे अनमोल रत्न प्राप्त हुए, साथ में श्री महालक्ष्मी का प्रादुर्भाव भी समुद्र में से हुआ। ''वरलक्ष्मी'' महालक्ष्मी का ही स्वरूप है। संसार के सुख और नियमन के लिए श्रीहरि विष्णुजी ने श्री महालक्ष्मी को पत्नी के रूप में स्वीकार किया। श्रीहरि की सिफारिश से श्री महालक्ष्मी - वरलक्ष्मी मानव को वरदान और सुख-संपत्ति, धन-संपदा प्रदान करती हैं।

## वरलक्ष्मी व्रत से मिलने वाले फल

वरलक्ष्मी का व्रत करने से माँ अपने भक्तों की इच्छाओं की पूर्ति करती हैं। इस देवी को ''वर'' और ''लक्ष्मी'' के रूप में जाना जाता है। इस व्रत को श्रावण शुक्ल पक्ष के दौरान किया जाता है। अगर सच्चे मन से इस व्रत को किया जाए तो परिवार में सुख-संपत्ति बनी रहती है। वहीं, अगर

विवाहित दंपति इस व्रत को करें तो उन्हें संतान प्राप्ति का सुख मिलता है। कहा जाता है कि वरलक्ष्मी व्रत करना अष्टलक्ष्मी पूजन के बराबर है।

वरलक्ष्मी व्रत के दौरान अगर आप इस व्रत की कथा सुनने से व्रत का फल दुगुना हो जाता है।

## वरलक्ष्मी व्रत की तिथि

सावन मास के पूर्णिमा के पहले आनेवाले शुक्रवार को वरलक्ष्मी व्रत रखा जाता है। अगर किसी कारण से प्रथम शुक्रवार पूजा-व्रत नहीं कर सके तो उन्हें जीवन में सुख-समृद्धि प्राप्त नहीं होती है। माना जाता है कि वरलक्ष्मी का व्रत रखने से और भक्ति भाव से माँ वरलक्ष्मी की उपासना करने से हर मनोकामना पूरी होती है। सावन मास के कोई भी शुक्रवार के दिन व्रत कर सकते है। मान्यता के अनुसार अगर विवाहित स्त्रियाँ इस व्रत को रखती हैं तो परिवार में सुख-समृद्धि आती है और धन की वर्षा होती है, मान्यता के अनुसार इस व्रत को रखकर लक्ष्मी माता के सभी रूपों को प्रसन्न किया जा सकता है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि वरलक्ष्मी-महालक्ष्मी का ही रूप है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार वरलक्ष्मी क्षीरसागर से प्रकट हुई थी। माता के रूप की बात की जाए तो उनका रंग उजला है और उसी रंग के वस्त्र धारण करती हैं।

## वरलक्ष्मी व्रत की पौराणिक कथा

वरलक्ष्मी व्रत कथा के अनुसार बहुत पौराणिक समय मैं मगध राज्य में कुण्डी नामक एक नगर था। प्राचीन काल की कथाओं के अनुसार स्वर्ग की कृपा से इस नगर का निर्माण हुआ था। यह नगर मगध राज्य के मध्य में स्थापित था। इस नगर में एक ब्राह्मणी नारी चारुमति अपने परिवार के साथ रहती थी। चारुमति कर्तव्यनिष्ठ नारी थी। जो अपने सास, ससुर एवं पति की सेवा और माँ लक्ष्मी जी की पूजा-अर्चना कर एक आदर्श नारी का जीवन व्यतीत करती थी।

एक रात माँ लक्ष्मी ने उस महिला की भक्ति से प्रसन्न होकर उसे स्वप्न में दर्शन दिए और उसे वरलक्ष्मी व्रत नामक व्रत से अवगत कराया। यह भी आश्वासन दिया कि इस व्रत के प्रभाव से तुम्हे मनोवांछित फल प्राप्त होगा। अगली सुबह चारुमति ने माँ लक्ष्मी द्वारा बताये गए वरलक्ष्मी व्रत को समाज की अन्य नारियों के साथ विधिवत पूजन किया। पूजन के संपन्न होने पर सभी नारियाँ कलश की परिक्रमा करने लगीं, परिक्रमा करते समय समस्त नारियों के शरीर पर विभिन्न स्वर्ण आभूषणों से सज गए।

उनके घर भी स्वर्ण के बन गए तथा उनके यहाँ घोडे, हाथी, गाय आदि पशु भी आ गए। सभी नारियाँ

चारुमति की प्रशंसा करने लगी। क्योंकि चारुमति ने ही उन सबको इस व्रत विधि के बारे में बताया था। कालांतर में यह कथा भगवान शिवजी ने माता पार्वती को सुनाई थी। मान्यता है कि इस व्रत कथा को सुनने मात्र से लक्ष्मीजी की कृपा प्राप्त होती है।

## वरलक्ष्मी जी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जयलक्ष्मी माता। तुमको निशिदिन सेवत, हरि विष्णु विधाता।। ॐ जय लक्ष्मी माता, उमा, रमा, ब्राह्मणी, तुम ही जग-माता। सूर्य-चंद्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।। ॐ जय लक्ष्मी माता। दुर्गा रूप निरंजनी, सुख सम्पत्ति दाता। जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता।। ॐ जय लक्ष्मी माता। तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता। कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता।। ॐ जय लक्ष्मी माता। जिस घर में तुम रहती, सब सद्गुण आते। सब संभव हो जाते, मन नहीं घबराता। ॐ जय लक्ष्मी माता। तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता। खान-पान का वैभव, सब तुम से आते।। ॐ जय लक्ष्मी माता। शुभ-गुण मंदिर सुंदर, क्षीरोदधि-जाता। रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता। ॐ जय लक्ष्मी माता महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई जन गाता। उर आनंद समाता, पाप उतर जाता।। ॐ जय लक्ष्मी माता।

## वरलक्ष्मी व्रत से देवी लक्ष्मी की कृपा

वरलक्ष्मी देवी वह है जो वर (वरदान) देती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह व्रत देवी पार्वती द्वारा समृद्धि और सुख की प्राप्ति के लिए किया गया था।

## दक्षिण भारत और वरलक्ष्मी व्रत

वरलक्ष्मी व्रत आंध्रप्रदेश, तेलंगाणा, कर्नाटक, तमिलनाडु एवं महाराष्ट्र जैसे दक्षिण के राज्यों में बहुत अधिक लोकप्रिय है। व्रत के दिन ज्यादातर विवाहित महिलाएँ अपने पति और परिवार के सदस्यों के कल्याण, धन, संपत्ति और वैभव के लिए यह व्रत करती हैं। सारी मंगल कामनाओं की पूर्ति के लिए वरलक्ष्मी व्रत दक्षिण भारत की स्त्रियाँ विशेष रूप से करती हैं। तिरुपति के पास माता पद्मावती के मंदिर तिरुचानूर में प्रति वर्ष बडे धूम-दाम से वरलक्ष्मी व्रत मनाया जाता है। बडी संख्या में भक्त इस में भाग लेकर अपने-अपने सौभाग्य को प्राप्त कर लेते हैं।

**जय श्रीमन्नारायण।**

## अध्याय - 7

### ब्रह्म, देवतागण और ऋषियों का वेंकटाद्रि पर भगवान विष्णु का दर्शन और राजा दशरथ का वेंकटाचल पर आना

(**वराह पुराण - भाग** - 1, अ. 43 - 50)

एक समय पर व्यास मुनि ने पौराणिक सूत से कहा था कि श्री वेंकटेश्वर ने अपने पूर्व प्रकटित रूप लेने पर सबसे पहले अपना प्रथम दर्शन ब्रह्म को दिया। इस बात को सूतमुनि ने नैमिशारण्य में शौनकादि मुनियों को इस प्रकार बताया -

एक समय पर दुष्ट राक्षसों (दैत्यों) ने योगियों, मुनियों, इन्द्र और देवताओं को सताना आरंभ किया। ये राक्षस हिरण्यकशिप के वंशज थे। दानवों के अत्याचार वे सहन नहीं कर पाये। अपने कष्टों को सुनाने के लिए, सब मिलकर क्षीराब्धि (क्षीर का समुद्र) में रहने वाले भगवान विष्णु के पास पहुँचे। उन्होंने उस समय प्रार्थना की- ''हे क्षीराब्धिशयन! जल प्लावन के समय आपने स्वयं विश्व की समस्त प्राणियों को अपने उदर में रखकर उनकी रक्षा की थी। आपने ही विश्व की पुनःसृष्टि के समय जड-चेतन जगत का निर्माण किया। सृष्टि के बाद आप ही विश्व स्वरूप बनकर व्याप्त हुए हैं। समस्त विश्व के सृष्टि कर्ता बने हैं। आप ही जगत्कर्ता हैं। आपने विश्व के शासन का दायित्व तो स्वीकारा है। अब आप क्षीर सागर में आदिशेष पर श्री महालक्ष्मी के साथ योगमुद्रा में शयनित हैं। हमारी व्यथाओं पर किंचित भी ध्यान नहीं दे रहे हैं। इससे हमारी स्थिति क्या होगी? हे प्रभु! हे भगवान! देवाधिदेव! हे दयासागर! हम पर दया कीजिये। कुछ कीजिए।''

सबकी प्रार्थनाएँ प्रस्तुत होने के पश्चात् वैकुंठ के सेनापति ने उनके पास आकर कहा कि मायाप्रवर विष्णु भगवान आजकल वेंकटाद्रि पर विराजे हैं। वहाँ जाकर ही भगवान से मिलना है। इस पर उन्होंने शंका की। वे भगवान को क्षीराब्धि छोडकर पृथ्वी पर जाने का कोई

कारण नहीं समझा। इसलिए उन्होंने वैकुंठ जाने का निर्णय लिया। रास्ते में उन्होंने वीणा वादन में मग्न नारद जी मिले। वे वैकुंठ से ही लौट रहे थे। सभी ने समवेत स्वर में त्रिलोक संचारी नारद से तीनों लोकों का समाचार पूछा। नारद ने मुनियों से कहा- ''मैं विष्णु भगवान की आराधना के लिए वैकुंठ गया। वहाँ अब विष्णु भगवान नहीं हैं। अब वे श्री लक्ष्मी समेत पृथ्वी पर एक पर्वत पर रह रहे हैं।'' नारद से समाचार पाकर सब मिलकर नारद सहित ब्रह्म से मिलने ब्रह्मलोक पहुँचे। उन्होंने सोचा था कि कम से कम विष्णु भगवान के पुत्र ब्रह्म अवश्य विष्णु का समाचार जानते होंगे। वे जानना चाहते थे कि असल में विष्णु भगवान कहाँ रह रहे हैं।

ब्रह्मलोक में चतुर्मुख-चतुर्भुज ब्रह्म से मिले। वहाँ कमलासन ब्रह्म गायत्री, सावित्री और सरस्वती सहित अपने सेवक, परिवार और अष्ट-दिक्पालकों से परिवेष्ठित हो विराजमान थे। कुशल मंगल के बाद देवताओं और ऋषियों ने ब्रह्म से निवेदन किया- ''हे चतुरानन! आप की कृपा से हम सब कुशल हैं। लेकिन रावण के अनुचरों का उत्पीडन असहनीय हैं। उनके पक्ष के कुछ दानव श्रीशैल (वेंकटाद्रि) प्रान्त में फैलकर ऋषि-मुनियों की तपस्याओं को भंग कर रहे हैं। उन्हें अनेक यातनाएँ पहुँचा रहे हैं। वे चाहते हैं कि ऋषियों की तपस्या निष्फल हो जाय। अब तक वे सब सहनशील रहे हैं। उनकी सहनशीलता की पराकाष्ठा हो गयी है। आगे कुछ सहन करने की क्षमता उनमें नहीं है। हमारा निर्णय है कि भगवान विष्णु ही एक मात्र रक्षक हैं। वे ही दानवों का संहार कर सकते हैं। हम सब ने मिलकर उनको ढूँढा। लेकिन वे कहीं नहीं मिले। आप सृष्टिकर्ता हैं। हमारे रक्षक भी हैं। आप ही हमारे लिए एक मात्र आधार हैं। भगवान विष्णु की सूचना देकर हमें अनुग्रहीत कीजिए।''

कुछ क्षण के लिए ब्रह्म सोच में पड गये। तत्पश्चात् देवताओं और ऋषियों को संबोधित कर कहा- ''हे देवतागण! हे ऋषिप्रवर! रावण ने कठोर तपस्या की है। तपस्या से उसने दिव्य वरों को प्राप्त किया है। इस कारण उसे असाधारण शक्ति मिली है। उसने मानव की शक्ति को अकिंचन माना है। मानव को छोडकर अब कोई उसे मार नहीं सकता, क्योंकि उसने मानव के द्वारा मृत्यु संभव न हो ऐसा वर नहीं माँगा। अब मानव को छोडकर अन्य कोई देवता या शक्ति उसे पराजित नहीं कर सकती। कोई

और उसका संहार नहीं कर सकता। इसीलिए उसकी मृत्यु केवल मानव से ही संभव हो सकती है। यह कार्य केवल विष्णु ही कर सकते हैं। वे ही इसके लिए सही मार्ग निकाल सकते हैं। माध्यम भी ढूँढ सकते हैं। अब वे पृथ्वी पर वेंकटाचल पर निवास कर रहे हैं। वेंकटाचल उनका मनभाया पर्वत है। वहाँ पहुँचने के लिए तैयार हो जाइए। मैं भी आप के साथ आऊँगा। हम सब मिलकर वेंकटाचल पर उनको ढूँढेंगे। इतना ही नहीं, इक्ष्वाकु वंशी दशरथ जी भी वेंकटाद्रि पहुँचेंगे। वहाँ वे स्वामिपुष्करिणी तट पर संतान प्राप्ति के लिए तपस्या करेंगे। भगवान विष्णु अवश्य संतुष्ट होंगे। उनको वरदान देंगे।'' सब देवतागण ब्रह्म के साथ ब्रह्मलोक (सत्यलोक) से भूलोक चले। सिद्ध और साधुओं की तपस्या स्थली गिरि-कंदराओं से भरकर पवित्रता बिखेरनेवाली दिव्य गिरि वेंकटगिरि पहुँचे। गंधर्वों का दिव्य संगीत वहाँ प्रतिध्वनित हो रहा था। अप्सराएँ और देवाँगनाएँ जब नाचती, तब उनके नृत्य, गान और घुँघुरुओं का नाद समस्त वन्य प्रान्त में प्रतिध्वनित हो रही थी। ऋषि-मुनियों ने, जो विष्णु की खोज में निकले थे, अनुभव किया कि उनके सामने से गुजरनेवाले पशु-पक्षी, गंधर्व आदि स्वयं विष्णु ही हैं, श्री वेंकटेश्वर ही हैं।

उस समय पृथ्वी पर राजा दशरथ शासन चला रहे थे। साठ हजार वर्ष से अयोध्या उनकी राजधानी थी।

राज्याधिकार तो उनके पास था। लेकिन उनकी कोई संतान नहीं थी। उन्होंने अपने परिवार पुरोहित से विचार विमर्श किया। महर्षि वशिष्ठ जी ही उनके परिवार के पुरोहित थे। वशिष्ठ जी कुछ समय तक मन में ही ध्यानरत रहे। कुछ सोच-समझकर कहा कि ''पुण्यात्माओं को कोई पाप नहीं लगता। दशरथ जी, आपने अपने पूर्व जन्मों में कभी कुछ पाप अवश्य किया है। उसके प्रभाव से ही आज आप इस जन्म में संतान विहीन हैं। फिर भी इसका हल है। आपको वेंकटाचल जाकर श्री वेंकटेश्वर की तपस्या करनी है। वेंकटाचल, पवित्र गंगा से दक्षिण में, दो योजन में स्थित विस्तृत दिव्य वन्य प्रान्त है। यह वैकुंठ से पृथ्वी पर लाया गया पवित्र क्रीडा क्षेत्र है। इसीलिए यह पर्वत शिखर प्रान्त श्री वेंकटेश्वर का मनोनीत प्रान्त है। यह भगवान को वैकुंठ से अधिक प्रिय है। श्री विष्णु यहाँ वेंकटेश्वर नाम से अपनी देवेरियों के साथ विराजमान हैं।'' आगे कहा-

''भगवान वेंकटेश्वर के दर्शनाभिलाषी होकर देवता गण, योगिपुंगव और ब्राह्मण यहाँ तपस्या करते हैं एवं धार्मिक अनुष्ठान किया करते हैं। विश्व-कल्याण के लिए ब्रह्म भी विष्णु वासस्थली पर ही, उनके समक्ष ही, तपस्या करते हैं। वे अपने भक्तों के प्रति अत्यंत दयालु हैं एवं करुणा समुद्र हैं। आप भी उनकी आराधना मुक्त मन से करेंगे तो अवश्य आपकी कामना पूर्ण होगी।''

महर्षि (पुरोहित) वशिष्ठ के परामर्श के फलस्वरूप राजा दशरथ को अत्यंत आनन्द मिला। तपस्या के लिए वे वेंकटाद्रि की ओर चले। यात्रा में गंगा, गोदावरी, कृष्णवेणी, भद्रा, तुंगा, पंपा, भवनाशिनी आदि नदियों में पवित्र स्नान किये। अंततोगत्वा वे वेंकटाचल पहुँचे। वहाँ के पर्वत शिखरों और घाटियों के सौंदर्य से मंत्रमुग्ध हुए। झरनों, सरोवरों, तालाबों आदि में पवित्र स्नान किये। पवित्र स्नान से पुनीत होकर निर्मल मन से पुत्र संतान की कामना लेकर दशरथ आगे बढे।

दशरथ और वशिष्ठ महर्षि तीर्थों की यात्रा करते-करते, अंत में वेंकटाद्रि पहुँचे। वहाँ उन्होंने पाया कि स्वामिपुष्करिणी तट पर अनेक प्रकार के याग आदि क्रियाओं में लग्न साधुजन, क्षेत्र को और पुनीत कर रहे हैं। उनमें कुछ विष्णु का स्मरण करते हुए योग साधनारत हैं तो कुछ मूर्ति को ध्यान में रखकर फूलों से उनकी पूजा कर रहे हैं। कुछ यज्ञ-यागादि क्रियाएँ संपन्न कर रहे हैं तो कुछ मंत्र जप निष्ठ हैं। कुछ प्रणव नाद ओंकार का उच्चारण कर रहे हैं तो अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार तारक - ब्रह्म - मंत्र, वराह मंत्र, वासुदेव द्वादशाक्षर मंत्र, गोपाल बीज मंत्र, नारायण अष्टाक्षरी मंत्र आदि का जाप कर रहे हैं। इन सबके बीच चतुर्भुज ब्रह्म भी थे। उन्हें देखकर दशरथ को आश्चर्य हुआ। ब्रह्म के हाथ में जपमाला (स्फटिक माला) थी और वे व्याघ्र चर्मासन पर विराजमान हो तपस्या में लीन थे। दशरथ ने उस दिव्य मंगल पवित्र दृश्य को देखकर अत्यंत विस्मय का अनुभव किया।

वशिष्ठ जी ने दशरथ को महर्षियों और ब्रह्म की तपस्याओं के फलस्वरूप भगवान विष्णु के प्रत्यक्ष होने के समय की निकटता का अनुमान लगाया और स्वामिपुष्करिणी में पवित्र स्नान करने की सलाह दी। तत्पश्चात् वशिष्ठ जी ने श्री वेंकटेश्वर अष्टाक्षरी मंत्र और यंत्र (उसका रूप चित्र) का उपदेश दिया। निर्देशित किया कि वे निष्ठा से मंत्र जप करते हुए तपस्या में लीन हो। वशिष्ठ महर्षि भी कुशासन (एक प्रकार के घास का आसन) पर आसीन होकर अष्टाक्षरी मंत्र जप के साथ तपस्यारत हो गये।

**क्रमशः**

(मिथ की
महिला चरित)

# सुकन्या

-डॉ.के.एम.भवानी,
मोबाइल - 9949380246.

भारतीय संस्कृति की महानता पारिवारिक संबंधों में छिपी हुई है। यह महानता हमें अपने पुराणों और इतिहासों से हिरासत में मिली है। मुख्यतः परिवार की मूल नींव पति-पत्नी के रिश्तों की कहानियाँ हमें सदा सही रास्ता दिखाते हुए उत्तम मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती हैं। भारतीय नारी के जीवन में शादी और पति मुख्य भूमिका निभाते हैं। पति चाहे अंधा हो, वृद्ध हो, रोगी हो, गुस्सैल या धर्मांध, पत्नी को इससे कोई मतलब नहीं है। पति की अनुगामिनी बनकर अपने सतीत्व से चिर यश पाई कई स्त्रियों की कहानियाँ आज भी भारतीय नारी का मार्गदर्शन करती रहती हैं।

ऐसी स्त्रियों की सूची में 'सुकन्या' भी एक है। सुकन्या शर्याति महाराज की इकलौती पुत्री है। महाराज ने बहुत लाड़-प्यार से उसका पालन-पोषण किया। एक बार महाराज शर्याति अपने परिवार के साथ वन विहार करने निकलते हैं। तब सुकन्या सखियों के साथ घूमती-घूमती एक जंगल में पहुँचती हैं। वहाँ ऋषि च्यवन बहुत सालों से तप कर रहे थे। उनके शरीर पर दीमक लग गया था। बडी बांबी बन गयी थी। उस बांबी में से सिर्फ़ उनकी आँखें जुगुनुओं की भाँति चमकते हुए दिखाई दे रही थीं। ध्यान देने की बात है कि कुछ ऋषि, मुनि तप करते समय ध्यान मग्न होने पर भी उसकी आँखें बंद नहीं होती हैं। वैसे ही च्यवन की आँखें खुली ही थीं सुकन्या दीमक की बांबी में से चमकती आँखों को जुगुनू समझ कर नटखटपन से उन्हें घास के तिनके से चुभाती है। तब उसे अंदर से दर्द भरी आवाज़ सुनाई देती है। सुकन्या घबराकर तिनका बाहर निकालते ही उसे उस पर खून दिखता है तो सुकन्या डरकर वहाँ से चली जाती है।

सुकन्या के इस अनजाने काम के कारण च्यवन ऋषि अपनी आँखे खो बैठते हैं। ऋषि के इस दुःख के प्रभाव से राज्य के सभी लोगों के मल-मूत्र निकलना बंद हो जाता है। उन्हें इससे घोर कठिनाई होती है। तब राजा मंत्रियों के साथ विचार करके अपने अनुचरों को यह आदेश देता है कि राज्य की सीमा पर ऋषि च्यवन तप में लीन है। जाकर देखना है कि उसे कुछ हानि तो नहीं पहुँची है। अगर उन्हें कोई हानि पहुँची तो इस का कारण कौन है? पता लगाओ। राज्य में यह सार्वजनिक कष्ट उस का परिणाम तो नहीं है?

महाराज के आदेशानुसार राज्य के मंत्री, सेना और कुछ प्रमुख मिलकर ऋषि च्यवन के आश्रम पहुँचते हैं। वहाँ उन्हें अपनी दिव्य दृष्टि से सब कुछ जान लेने वाले च्यवन के द्वारा सब कुछ मालूम होता है कि उसकी यह स्थिति के लिए जिम्मेदार राज कुमारी सुकन्या है। महाराज यह जानकर बहुत दुःखी हो जाते हैं और ऋषि के दुःख को कम करने के लिए उनकी देखभाल करने दासियों को नियुक्त करने की अनुमति माँगता है। तब च्यवन ऋषि राजा शर्याति के इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए कहते हैं कि धन लेकर सेवा करनेवाली दासी इमानदारी से उन की सेवा ठीक से नहीं करती हैं। जिस में अपनापन नहीं होता है। ऐसी दासियों से क्या प्रयोजन है? अगर राजा उन की सही सहायता करना चाहते हैं तो अपनी पुत्री के साथ उस का विवाह करवा दें। तो वह उस की पुत्री उसे पति मानते हुए ठीक देखभाल करेगी। जिससे उन्हें सही सहायता प्राप्त होगी। राजा की पुत्री सुकन्या उन की पुत्री बन कर अच्छी तरह उन की देखभाल करेगी। यह सुनकर राजा चिंतित हो जाता है कि ऋषि च्यवन तो बहुत ही वृद्ध हैं। गुस्सैल स्वभाव के भी हैं। अब तो अंधा भी बन गये हैं। ऐसे आदमी के साथ वह कैसे अपनी लाडली पुत्री का विवाह रच सकता है?

महाराज शर्याति इस दुविधा में तड़प रहे थे, तब सुकन्या खुद वहा पहुँचती है और कहती है कि पिता को चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। वह खुशी से च्यवन ऋषि से विवाह करेगी। पुत्री के कहने पर राजा शर्याती च्यवन ऋषि से सुकन्या की शादी करवा देते हैं। सुकन्या ऋषि च्यवन के साथ आश्रम जीवन जीना आरंभ करती है। वह बहुत श्रद्धा और भक्ति से अंधे पति की सेवा करती रहती है। समय के साथ वह हर काम करने में पति की मदद करती रहती है।

एक दिन सुकन्या नदी से पानी लाने जाती है। उसी समय उस ओर से गुजरनेवाले दो अश्विनी देव सुकन्या को देखकर उसकी सुंदरता पर मोहित हो जाते हैं। वे सुकन्या के पास जाकर उन दोनों में से किसी एक से विवाह करने का प्रस्ताव रखते हैं। तब सुकन्या बताती है कि वह विवाहिता है और ऋषि च्यवन की पत्नी है। पतिव्रता नारी है। उससे ऐसा प्रस्ताव रखना गलत और

अनैतिक है। लेकिन अश्विनी देव उससे कहते हैं कि ऋषि च्यवन तो बूढ़े हैं। राज कुमारी, युवा वयस्का सुकन्या उसके साथ आनंद से कैसे सकती है? इसलिए उसे किसी यौवन पुरुष से विवाह करना चाहिए। यह सुनकर तुरंत सुकन्या उनसे कहती है कि उसने च्यवन को ही पति मान लिया है। इसलिए यह प्रस्ताव रखना उचित नहीं है। अगर वे सच में यह चाहते हैं कि सुकन्या युवक से विवाह करके ही आनंद से रह सकती है। तो उन्हें ऋषि च्यवन को ही युवक बना देना चाहिए। यह सुनकर अश्विनी देव कहते हैं कि वे ऐसा अवश्य कर सकते हैं। इस के लिए वे एक शर्त रखते हैं। शर्त यह है कि सुकन्या अपने पति च्यवन को नदी के पास लाना होगा। उन के साथ नदी में स्नान कराना होगा। तब तीनों एक जैसे बन जायेंगे। तब उसे अपने पति च्यवन को अलग से पहचाननी होगी। अगर वह इस में असफल होती है तो उन में किसी एक साथ विवाह करना होगा।

यह सुनकर सुकन्या आश्रम वापस चली जाती है। जाकर पति से सारी बात कहती है। पत्नी के सतीत्व से परिचित पति च्यवन उसके साथ अश्विनी देवों के चले आते हैं। ऋषि च्यवन और अश्विनी देव तीनों एक ही साथ नदी में डूबकर बाहर आते हैं तो तीनों एक जैसे दिखाई देने लगते हैं। बूढे च्यवन भी युवक बन जाते हैं। तब सुकन्या अपनी पतिव्रता धर्म के बल से एक ही जैसे दिखने वाले तीनों में से अपने पति च्यवन को पहचान लेती है। तब अश्विनी देव सुकन्या के सतीत्व की सराहना करते हुए उन्हें आशीष देकर लौट जाते हैं।

इस प्रकार सुकन्या अपने सतीत्व के बल से स्त्री धर्म को निभाने में सफल होती है। साथ ही अपने पति को युवा बनाने में भी सफल होती है। सुकन्या का यह व्यवहार आदर्श नारी के व्यक्तित्व का जीवंत उदाहरण बन कर रह जाता है। सुकन्या का चरित्र यह भी स्पष्ट करता है कि भारतीय नारी समय की गति को भी बदलकर असंभव को संभव बनाने में सफल होती है। भारतीय नारी के व्यक्तित्व व चरित्र की यही महानता है।

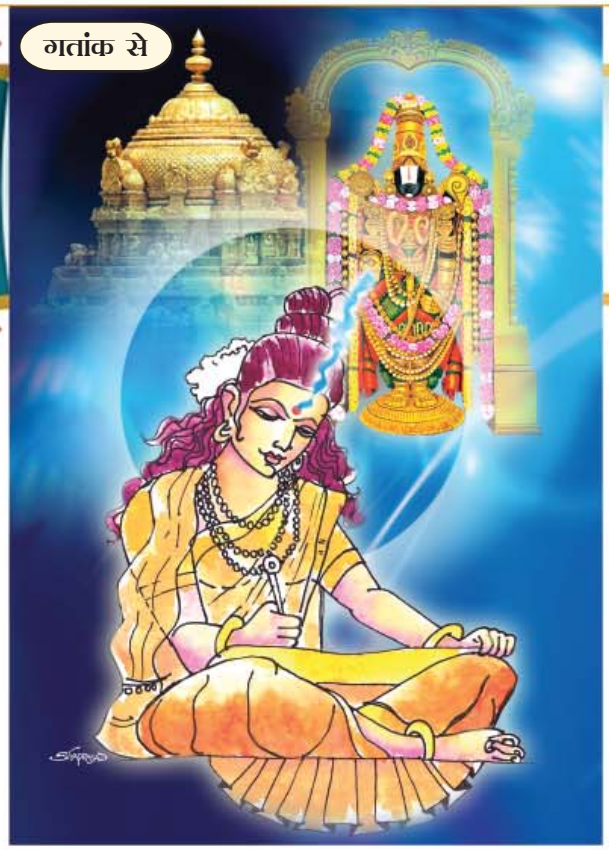


# श्री वेंकटाचल की महिमा

## (हिंदी गद्यानुवाद)

*तेलुगु मूल*
*मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा*

*हिंदी अनुवाद*
*आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी*
*मोबाइल* - 9849670868

### कामिनी के रूप में लक्ष्मी का वेश धारण :

श्रीहरि की बातें सुन कर लक्ष्मी ने मंदस्मित होकर कामरूपिणी के रूप में वेश बदल लिया। साथ ही नखरे करने लगी। उन का वेशधारण अतिसुंदर है। रेशमी लहंगा पहनी हुई है। उस पर सुवर्णिम रंगवाली चमकीली जरी से बनी हुई साडी पहनी है। मोतियों से जटित सुंदर रंगीली रेशमी चोली पहनी हुई है। कुच भार से कमर उसकी कांप रही है। कटिबंध बांधी हुई है। आंखों में सुरमा, शरीर भर चंदन लेप, ललाट पर कस्तूरी तिलक लगायी है। सर से नील कुंतल केश लटक रहे हैं। अपनी संपूर्ण कलाओं से वे गुडिया जैसा सुंदर लग रही है।

सुंदर मोतियों से बनी नथ को माँग में लगायी है। कर्णफूल, चोटी का आभरण, गले में पगडों की माला, और भी अनेक कंठाभरण, कान, नाक, गला, भुजाओं में अनेक आभरण पहनी हुई है। उन आभरणों में रत्न, हीरे आदि जटित हुए हैं। सोने के कडे, रत्नों से बनी वंकी, रत्नों से बने कंगन हाथों पर पहनी हुई है। सारे आभरण अपनी-अपनी कांति से लक्ष्मी पूरे शरीर को कांतिमय बने रहे थे। आभरणों से लदी लक्ष्मी का रूप मनमोहक था। पैरों में पायल पहन कर लक्ष्मी हंस की तरह चलती दिखाई दे रही है। मानो लक्ष्मी विश्वमोहिनी बन कर वहाँ पर नखरे कर रही हैं। मानो धरती की सारी बिजलियाँ एकत्रित होकर लक्ष्मी के शरीर से विकीर्ण हो रही हैं। वहाँ देखनेवालों को लक्ष्मी अद्भुत लग रही थी। हाथ में कमल लेकर लक्ष्मी नाचते नखरे दिखाते अपनी चमक-दमक से सभी को मुग्ध कर रही है। ऐसी लक्ष्मी ने हरि की ओर देखा। लक्ष्मी को देखकर श्रीहरि ने मुस्करा दिया।

### श्रीहरि का विट वेश धारण :

सुंदर लक्ष्मी को देखकर श्रीहरि ने भी अपना वेश बदल लिया। मनुष्य रूप धारण कर लिया। वे कैसे हैं? नील वर्णवाले, आजानुबाहू, अह्लाद चेहरेवाले, काले बालवाले, विशाल ललाटवाले, कंबु कंठवाले, मंगलकरवाले, नीरजाक्ष, विशाल वक्षवाले, सिंहकटिवाले, कोटि मन्मथ आकारवाले, बहुत सुंदर मंदस्मित चेहरेवाले, सुकुमार पुरुष देखनेवाली स्त्रियों को मोहित करनेवाले

विट पुरुष हैं। श्रीहरि का यह वेश सब के लिए बहुत सुंदर है। इस के अतिरिक्त वे अनेक आभरणों से सुशोभित हैं। सर की पगडी पर रत्न चमक रहे हैं। गले के फूलों की मालाएँ भुजाओं पर फैल रही है। साफ किए हुए सफेद धोती उनके शरीर पर सुंदर लग रही है। उन की इस सुंदरता को देखते ही बनता है। सुगंध परिमलयुक्त लेपन उन के वक्ष पर लगाया गया है। उस के ऊपर मोतियों की माला चमक रही है। मोतियाँ, रत्न, हीरे, नीले रंग के पत्थर आदि जटित होने से उन के शरीर के आभरणों से कांति विकीर्ण हो रही है। कानों में कुंडल हिल रहे हैं। काश्मीर शाल ओडा हुआ है। अपने इस वेश से सब को वे सम्मोहित कर रहे हैं।

ललाट पर चंदन की तिलक, जैसे पूर्णचंद्रमा पूर्ण कलाओं के साथ चमक रहे हो, दांतों की कांति विचित्र रूप से विकीर्ण हो रही है। मानो वे हीरों की पंक्ति को भी पराजित कर रहे हो। मूँह में कर्पूर तांभूल सेवन के कारण उन के ओंट लाल-लाल बिंब फलों को लज्जित कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त नासिका पर मोती लगा हुआ है।

उस के दोनों तरफ शरीर का नील रंग चमक रहा है। उन की नवंकुर चमकनेवाली मूंछे सुंदर लग रही है। इस रूप में मनुष्य के रूप में श्रीहरि बहुत सुंदरवाले लग रहे हैं। उन के शरीर की चमक ऐसी थी कि मानो घने मेघों के बीच में बिजली चमक रही हो। हाथों में सोने के कडे चमक रहे हैं। वाम हस्त में चुरी पकडे हुए हैं। दाएँ हाथ से धवल वस्त्र को हिला रहे हैं।

शरणागत वत्सल आर्तजनों के उद्धार करने की उपाधि रखनेवाले श्रीहरि पैरों में कडियों समेत चल रहे हैं। ऐसे पुरुष वेशधारी हरि नखरे करते हुए सुंदर कामिनी जैसी लगनेवाली लक्ष्मी से मिल कर पादुकाएँ पहन कर उस यज्ञ को देखने चले आ रहे हैं। इस रूप में सिरि और हरि दोनों अपने-अपने वेश बदल कर वहाँ संपन्न होनेवाले यज्ञ को देखने पधारे हैं।

## विप्र जनों की ऊहाएँ :

इस रूप में चले आ रहे सिरि और हरि को देखकर विप्र जन सोच में पड गए कि ''वे कौन है?'' बाहर से उन से सवाल किया। ''वनितामणी के साथ मिलकर आनेवाले वे कौन हैं? महिमावान वसंत माधव तो नहीं है! नल, जयंत, नलकुबर, इंद्र, चंद्र या शिव भगवान तो नहीं है! इस महाजंगल में इस समय क्यों आये हैं? उन से विकीर्णहोनेवाली कांति गगन दिग्भाग में फैल रही है। वे विप्र हैं या क्षत्रीय हैं? विप्र के लिए आवश्यक यज्ञोपवीत चिह्न के रूप में लटक रहा है। क्षत्रीय के लिए वाम हस्त में आयुध धारण किया हुआ है। व्यवहार केलिए साथ में सुंदर स्त्री को लाये हैं।'' यह कहते वे सब उन की तरफ आश्चर्य से देखने लगे। तब हरि यज्ञकुंड के पास पहुँच गए। विप्रों के बीच में सिरि के साथ बैठ गए। उन से संवाद करने लगे।

उनकी शरीरों से विकीर्ण होनेवाली कस्तूरी गंध मुनियों की नासिकाओं में फैल गयी। तब उन्होंने पद्म दलाक्ष की ओर देख कर इस रूप में कहा।

## विप्रों का श्रीहरि से संवाद :

''हे महाराज! आप का कौन सा गाँव है? आप का नाम क्या है? आप के माता-पिता कौन हैं? आप यहाँ क्यों आये हैं? यहाँ इस वन में हम यज्ञ करनेवाले हैं। हम पर दया करके हमारे इस कार्य में आप सहायता कीजिए। हमारा रक्षक बन कर असुर, चोर मृगादि के भय से हमें मुक्त कीजिए। हम जैसे तापसियों को आप जैसे राजाओं की जरूरत है। यही धर्म पद्धति है। इसलिए हे निर्मलात्मा! आप यहाँ रहते हुए हम से यज्ञ कराइए।'' विप्रों की बातें सुन कर हंसते हुए चक्री ने उन से कहा।

''मैं राजा नहीं हूँ। न ही मैं विप्र हूँ। आखिर मैं वैश्य या शूद्र भी नहीं हूँ। मेरे माता-पिता नहीं है। इस धरती पर मेरे लिए कोई वास नहीं है। मैं सर्वस्थलों में सर्व रक्षक बन कर घूमता रहता हूँ। मैं सगुण हूँ और नाम, वर्णाश्रम विहीन हूँ।'' चक्री के इस रूप में कहने से विप्रों ने यह कहा। ''हे महात्मा! आप की बातें इस समय हमारी समझ में नहीं आयीं। आप के साथ रहनेवाली यह स्त्री कौन है?'' पूछने पर हरि ने मंदस्मित होकर उन से इस रूप में कहा। ''मेरे लिए मैं अकेला हूँ। मेरे लिए कोई नहीं है। मैं अकेला हूँ। मुझे अकेले पाकर इस जंगल में मोहिनी के रूप में मुझे इस यानादी स्त्री ने पकडा है।

हम दोनों साथ-साथ बात करते आप मुनियों को यहाँ देखकर आप के पास चले आये हैं। यहाँ आप क्या-क्या करते गीत किस रीति से गाँ रहे हैं? यौदुंबर शाखाओं को पकड कर उन के नामों के साथ देवताओं का आह्वान क्यों कर रहे हैं? आप की यह पशु हिंसा किस लिए हैं? अब आप ही बताइए।'' इस रूप में हरि के पूछने पर वे कर्मनिष्ठ मुनियों ने बताया। ''यह वप याग करने का समय है। इसलिए वेदोक्त शास्त्रों के अनुसार वपयाग पूरा करने के बाद आप से पूछे हुए सारे सवालों का जवाब देंगे। तब आप हम से सुन सकते हैं।'' कहते हुए।

## श्रीहरि के द्वारा 'वप' को ग्रहण करना :

मुनियों की बातें स्वीकार करने से वे मुनिगण हरि को लेकर वप याग करने लगे। तब हरि ने शंख-चक्र सभी को दिखाकर वप को ग्रहण किया।

## विप्रों का आनंद :

हरि को अच्युत, परमात्मा, अनंत के रूप में सब के जानने के बाद अपने हाथों से हरि ने वप को ग्रहण करके एक ही बार उसे निगल लिया। इस दृश्य को देख कर सारे मुनिगण आश्चर्य हुए। मानो वे निर्जीव गुडियाएँ ही बन गए। भक्ति में परवश होकर वे पद्म दलाक्ष की ओर ताकने लगे।

तब श्री वत्सलांचनांचित विशाल वक्षवाले, सकल दिव्य रत्नाभरण भूषण वाले, सहस्र कोटि मार्तांड प्रभास समान गात्रवाले, वपा परिमल मिलित अधरोंवाले नारायण ने करुणा-कटाक्षों के साथ विप्रों की ओर देख कर कहा। ''मैं परम तुष्ट हुआ हूँ।'' कहते हुए रमा समेत अदृश्य हो गए।

तब वे विप्र जनों ने संतोष का अनुभव किया। क्यों कि साक्षात हरि ही वपा ग्रहण किया। इससे हमारा जन्म ही धन्य हो गया। बडे संतोष के साथ आगे उन्होंने यज्ञ को समग्र पूरा किया। बाद में अवभृथ स्नान करके वे मुनिगण धन्य हुए।

इस रूप में शौनकादि मुनियों को सुनाकर उनकी तरफ देखते हुए सूत ने आगे उन से इस रूप में कहा। ''पूर्व जाबाली नामक महत्मा ने मुझे मुख्य रूप से इस कथा को सुनाया। वही कथा अत्यंत प्रीति से मैंने आप को सुनायी। उसी समय रमाधीश द्वारा की गयी एक और कथा है, जो धरती में विशेष इतिहास के रूप में प्रचलित होगी।

उस कथा के बारे में भी सुनाऊंगा।'' अत्यंत विश्वास के साथ सूत ने फिर से कथा सुनाना शुरू किया। ''यज्ञ में भाग लेकर ब्राह्मणों के द्वारा दिये गए 'वप' को ग्रहण करके श्रीहरि ने उन का उद्धार किया। तदूपरांत श्रीमन्नारायण सुंदर सुकुमार शरीर के साथ वेंकटगिरि के उत्तर भाग में सिरि समेत विहार करते समय एक दिन देशांतर की यात्रा करते एक विप्र ब्राह्मण दिखाई दिया।

**क्रमशः**

# बलराम जयंती

- डॉ.एच.एन.गौरीराव
मोबाइल - 9742582000

बलराम भगवान आदिशेष के अवतारी माने जाते हैं। वे श्रीकृष्ण के बडे भाई हैं। श्रीकृष्ण उन्हें प्यार से 'बलदाऊ' पुकारते हैं। बलराम अवतारी और कारण जन्मा हैं। बलराम जी का जन्म भाद्रपद मास कृष्ण पक्ष की षष्ठी तिथि, स्वाति नक्षत्र बुधवार मध्याह्न के समय तुला लग्न में रोहिणी के गर्भ से हुआ था। इस शुभ दिन को 'बलराम जयंती' के रूप में देशभर में मनाया जाता हैं। कुछ प्रांतों में अक्षय तृतीया के दिन बलराम जयंती का आचरण किया जाता हैं, तो और कुछ प्रांतों में श्रावण पूर्णिमा के दिन अनुष्ठान किया जाता है। भारत के विविध प्रांतों में बलराम जयंती के विविध नाम है- उत्तर भारत में 'ललही छठ' कहा जाता है तो ब्रज प्रांत में 'बलदेव छठ' और गुजारात प्रांत में 'रंधन छठ' कहा जाता है। बलदेव का आयुध 'हल' है, इससे यह पर्व 'हलषष्ठी' या 'हलछठ' भी कहा जाता है। इनके अलावा इसे हर छठ व्रत, चंदन छठ, तिनछठी भी कहा जाता हैं।

बलरामजी के बारे में भागवत पुराण तथा महाभारत में उल्लेख मिलते हैं। वे दैवांश संभूत थे। परंतु उनके अवतार के बारे में भिन्न मत है। धर्म ग्रंथों के अनुसार उन्हें अनंतनाग या शेषशायी का अवतार माना जाता हैं और भगवान विष्णु हमेशा इसी शेषशायी पर शयन करते हुए दिखाई पड़ते हैं। शेषनाग को भगवान विष्णु का अंश माने जाते हैं। जब भी भगवान विष्णु का अवतार भूलोक में हुआ तब शेषशायी भी अवतारित हुए। त्रेतायुग में श्रीरामजी का अवतार होता है तो शेषशायी लक्ष्मण के रूप में अवतार लेते हैं। लक्ष्मण एक बार श्रीराम से पूछते हैं कि वे उनके बड़े भाई बनना चाहते हैं। उसकी इच्छा की पूर्ति द्वापर युग में संभव होता है। इस युग में भगवान विष्णु श्रीकृष्ण के रूप में अवतार लेते हैं तो उनके बड़े भाई के रूप में, श्रीकृष्ण से पहले शेषशायी का प्रकट होता है। वैष्णव संप्रदाय में बलराम को स्वयं विष्णु का अवतार माना जाता हैं। श्रीकृष्ण का अवतार धर्म रक्षणार्थ हुआ था और उनके हरेक सत्कर्म में बलराम ने सहायता की। इस प्रकार वैष्णव संप्रदाय में बलराम श्रीकृष्ण का ही विस्तार रूप है।

बलराम जयंती पर्व के शुभ अवसर पर बलरामजी के बारे में जानना अत्यंत महत्व रखता है। जो जन्म से लेकर अंत तक अत्यंत रोचक है।

**पौराणिक कथा :**

पौराणिक कथा के अनुसार मथुरा नरेश कंस अपनी असुरी शक्ति से अत्याचारी बन गया था। उन्होंने अपनी प्यारी बहन देवकी का

विवाह वसुदेव से अत्यंत प्रेम के साथ करवाया था। किंतु विवाहोपरांत जब अशरीरवाणी ने उनको चेतावनी दी कि देवकी और वसुदेव के आठवें पुत्र से उसका वध होगा, तुरंत कंस ने देवकी और वसुदेव को कारावास में भेज दिया और एक-एक करके उनके 6 बच्चों की हत्या की। देवकी के गर्भ में दैवांश बच्चा जन्म लेने से पहले, विश्वास किया जाता है कि योगमाया ने उस बच्चे को अपनी माया से देवकी के गर्भ से संकर्ष (खींचना) करके वसुदेव की पहली पत्नी रोहिणी के गर्भ में स्थानांतरित किया। देवकी के गर्भ से बलराम खींचे जाने के कारण वे 'संकर्षण' भी कहे जाते है। नंद के गोकुल में रोहिणी के पुत्र के रूप में बलराम का जन्म होता है। इससे इनका एक और नाम पड़ा 'रौहिण्येय'। फिर आठवें पुत्र के रूप में श्रीकृष्ण का जन्म होता है। इन दोनों का बचपन नंदगोकुल में गुजरता है।

## बलराम के अन्य नाम :

रोहिणी का बच्चा देखने में बहुत सुंदर था। सबको रंजन करने वाले इस बच्चे का नाम ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्तक तथा यदुवंशियों का आचार्य गर्ग महामुनी ने 'राम' रखा। सबसे शक्तिशाली होने से 'बलराम' कहलाया। कृष्ण के भाई होने से वे 'अच्युताग्रज' भी कहे जाते हैं। बलराम श्वेत वर्ण वाले थे और वे हमेशा नीले रंग के वस्त्र पहनते थे। इससे इनका एक और नाम 'नीलांबर' है; केशों को एक चोटी बनाते थे और हाथ पैरों में कंकण धारण करते थे; हमेशा एक हल को अपने साथ रखते थे। इसी हल के कारण 'हलधर' कहलाए। वे शक्तिशालियों में श्रेष्ठ होने से तथा लोक को भद्र दिलानेवाले (कल्याण करनेवाला) होने से 'बलभद्र' नाम से पुकारे जाने लगे; प्रलंबासुर नामक राक्षस का वध करने से 'प्रलंबघ्न' नाम भी पड़ा।

भगवान बलराम का व्यक्तित्व भी अत्यंत महत्व का है। व्यक्तित्व के कारण ही वे महान व्यक्ति तथा अवतार पुरुष बन गए, जिन गुणों को अपनाने से कोई भी व्यक्ति सामान्य से महान बन सकता है।

## आदर्श व्यक्ति :

एक आदर्श व्यक्ति के सभी गुण बलराम में दिखाई पड़ते हैं। वे एक आदर्श प्रिय पुत्र थे। वे हमेशा अपने माता-पिता से विनम्रता से बातें करते थे। वे एक आदर्श भाई भी थे और श्रीकृष्ण के प्यारे बलदाऊ बने। छोटी उम्र में श्रीकृष्ण के नटखट से तंग आने पर भी वे कभी भी क्रोधित नहीं हुए। बलराम जी भी श्रीकृष्ण से हमेशा विशेष स्नेह रखते थे। श्रीकृष्ण भी बलराम को अधिक गौरव देते थे। ये दोनों भिन्न स्वभाववाले होने पर भी एक दूसरे से बहुत प्यार करते थे। राजा होने के बाद भी श्रीकृष्ण से विचार करने के बाद ही किसी काम में निर्णय लेते थे। रेवती के साथ उनका विवाह हुआ था। सदा के लिए वे आदर्श दंपति बने। इसलिए वे दोनों आज भी मंदिरों में पूजे जाते हैं। बलराम का सत्संबंध केवल परिवार तक ही सीमित नहीं रहा। वे एक आदर्श राजा थे; प्रजा को वे अपनी संतान मानते थे।

## सरल स्नेही स्वभाव :

बलराम जी बचपन से ही शान्त तथा मृदु स्वभाव के व्यक्ति थे। बड़े होने के बाद वे अत्यंत गंभीर, सरल और

नेकी स्वभाव के व्यक्ति बने। वे हमेशा न्याय के मार्ग पर चलते थे। सब पर दया रखते थे तथा सबको समान दृष्टि से देखते थे। अपने इस स्वभाव से वे लोकप्रिय राजा बने। वे कौरवों और पांडवों से समान प्रीति रखते थे। उन्होंने भीम और दुर्योधन को बिना किसी भेदभाव से गदा युद्ध सिखाया। अपने पारिवारिक संबंधों को सुधारने के लिए उन्होंने कौरवों के साथ विवाह संबंध भी बढ़ाया। वे महाभारत जैसे युद्ध के इच्छुक नहीं थे। परंतु जब वे युद्ध को रोक नहीं पाये तो वे तीर्थ यात्रा के लिए चल पड़े। क्योंकि पांडव और कौरव दोनों उनके लिए समान प्रिय थे। किसी भी एक पक्ष का वे समर्थन करना नहीं चाहते थे। इस तीर्थयात्रा के दौरान उन्होंने तिरुमल वेंकटेश्वर स्वामी का भी दर्शन किया।

## अमित बलवान तथा महान योद्धा :

बलराम गदा युद्ध का सबसे बड़ा योद्धा माने जाते थे। बलराम जब बालक थे, तब से ही वे अपने गदा से कंस द्वारा भेज गए कई असुरों का वध कर चुके थे, जिनमें मुख्य रूप से धेनुकासुर और प्रलंबासुर थे। बलराम इतने शक्तिशाली थे कि वे हाथियों के झुंड से भी अधिक शक्तिमान माने गये। बलराम के इस अपरिमित बल से 'बलभद्र' कहलाए। बलराम के अस्त्र हल और मूसल हैं। साधारण रूप में कोई भी व्यक्ति हल को कृषि क्षेत्र में उपयोग करता है। लेकिन बलरामजी उसको हथियार के रूप में प्रयोग करते थे जो असाधारण था, क्योंकि उसे हाथ से उठाना ही बहुत मुश्किल है।

बलराम सरल और शांत स्वभाव के व्यक्ति थे, परंतु वे अत्यंत पराक्रमी भी थे। वे गदा युद्ध, मल्लयुद्ध और कुश्ती में सुप्रसिद्ध थे। इससे भीष्म पितामह ने दुर्योधन और भीम को बलराम के यहाँ गदा युद्ध सीखने भेजा था। खुद जरासंध जानते थे कि उसके जैसे सम बलशाली केवल बलराम ही है। अगर श्रीकृष्ण इन दोनों के बीच न आते तो बलराम जरासंध को मौत के घाट पहुँचाते थे। उन्होंने छोटी उम्र में कृष्ण के साथ मिलकर कंस से भेजे गए अनेक राक्षसों का वध किया। इनमें प्रमुख प्रलंबासुर तथा मुष्टिक को बलराम ने और धेनुकासुर को कृष्ण ने वध किया था। वे अन्याय और अत्याचार को नहीं सहते थे। इससे कंस अपने मामा होने पर भी अत्याचारी होने से कृष्ण से मिलकर उसका वध भी किया। ये सब लोक कल्याणार्थ ही है। एक बार खेलते समय कौरवों पर क्रुद्ध होकर अपने हल से हस्तिनापुर को यमुना नदी में डुबोने तैयार हो गए थे।

## कृषि को प्रधानता देनेवाले हलधर :

बलराम हमेशा कृषि को प्रधानता देते थे। उनका बचपन प्रकृति की गोद में, नंद गाँव में गुजरा। श्रीकृष्ण तथा अन्य गोपालकों से मिलकर वे गोपालन तथा कृषि करते थे। उन्होंने हल को अपना आयुध बनाया, क्योंकि वे खेती को उच्चकोटि का काम मानते थे। इससे राजा बनने के बाद भी वे कृषि तथा किसान को ही श्रेष्ठ मानते थे। उनको कृषि तथा कृषि के उपकरणों के प्रति अपार ज्ञान

था। वे खेती के क्षेत्र में विकास लाये। उन्होंने यमुना नदी के पानी को कृषकों के जमीन तक पहुँचाया। आज भी किसानों के लिए वे आराध्य देवता है। वे बलराम को अपने संघठन शक्ति का प्रतीक मानते हैं। वे कृषकों के रक्षक तथा धन-धान्य से समृद्ध करने वाले और शक्ति देनेवाले माने जाते हैं। 'गीत गोविंद' में जयदेव ने लिखा है, 'केशव घृतहलधर रूप धरे, जय जगदीश हरे'। अर्थात् भगवान केशव (हरि) ने हलधर का रूप धारण किया है। वह हलधर बलराम ही है।

## स्थितप्रज्ञता :

बलराम जी की शक्ति का अर्थ केवल शारीरिक बल ही नहीं उन का आध्यात्मिक बल भी उन्नत स्थिति में था। उन्होंने कृष्ण के साथ सांदीपनि मुनि के यहाँ वेदादि का अध्ययन तथा अस्त्र-शस्त्र का अभ्यास किया। उनका राग, द्वेष, भय से मुक्त मन था। उनमें सुख की लालसा नहीं थी; आध्यात्म शक्ति भरपूर थी। वे शांत स्वभाव वाले थे। कठिन परिस्थितियों में संयम का पालन करते हुए, धैर्य के साथ कर्तव्य पालन करते थे। बाहर की परिस्थितियाँ जितने भी विषम क्यों न हो, वे विचलित नहीं होते थे। इसी प्रबुद्धता से महाभारत युद्ध के बाद अंतर्युद्ध से एक दूसरे को मारकर यदुवंशियों का सर्वनाश होते देखकर भी वे विचलित न होकर शांत मन से यमुना के तीर पर सुस्थिर चित्त से ध्यान करते हुए योग-समाधि में मग्न हो गए। तब उसकी जीवात्मा (चैतन्य या ज्योति) एक सांप के रूप में बाहर आकर अदृश्य हो गयी और बलराम जी का शरीर निर्जीव हो गया और इस रूप में बलराम अवतार की समाप्ति होती है।

## बलराम जन्मोत्सव :

बलराम जयंती या हल छठ को देशभर में श्रद्धा-भक्ति तथा वैभव के साथ मनाया जाता है। बलराम के मंदिरों में तथा कृष्ण के मंदिरों में इस दिन विशेष पूजा

की जाती है। मंदिर को पूलों तथा पत्तों से अलंकृत किया जाता है। सुबह उपवास रखकर अर्चक भगवान को पंचामृत अभिषेक तथा नव वस्त्र धारण कराके, आभूषणों से अलंकृत करने के बाद, भगवान की विशेष पूजा करते हैं; विशेष भोग को नैवेद्य के रूप में चढ़ाया जाता है और बाद में उसको श्रद्धालुओं में वितरित किया जाता है। श्रद्धालु भी इस दिन को उपवास रखते हैं। पूजा के बाद भजन, कीर्तन और लोक गीत गाते हुए उत्साह से बलराम जन्मोत्सव मनाया जाता है।

मथुरा में दाऊजी का मंदिर तथा जम्मू-कश्मीर के बलराम मंदिर, पूरी जगन्नाथ मंदिर में बलराम आदि प्रसिद्ध है। इन मंदिरों में माता रेवती देवी सहित बलराम जी विराजमान है। हल छठ के दिन मथुरा के दाऊजी के मंदिर में मेला का आयोजन किया जाता है। छह दिवसीय कुश्ती की प्रतिस्पर्धा का भी आयोजन किया जाता है। जम्मू के मंदिर में विशेष पूजा की जाती है। वैवाहिक जीवन की कामना करते हुए अनेक श्रद्धालु यहाँ आते हैं। कृष्ण के मंदिरों में भी बलराम जयंती का आचरण किया जाता है।

घरों में माताएँ बलराम जयंती के अवसर पर अपने पुत्र की स्वास्थ्य तथा दीर्घायु तथा अकाल मृत्यु से बचने के लिए और नवविवाहित स्त्रियाँ संतान के लिए छठ माता की पूजा करती हैं। माना जाता है कि अपने छह बच्चों की मौत के बाद कारावास में देवकी भी नारद मुनि की सलाह के अनुसार छठ माता की पूजा की थी। विश्वास किया जाता है कि इस पूजा के फल से देवकी के दोनों बेटे बलराम और कृष्ण मृत्यु से बचकर जीवित रहे।

इस व्रत के कुछ नियम ये है- बलराम हल से खेती करते थे; श्रीकृष्ण गोपालक थे। इनके प्रति गौरव तथा भक्तिवश इस दिन घर में हल से जुते गये चावल तथा गाय के दूध, दही और घी का सेवन वर्जित हैं।

इनकी जगह भैंस के दूध, दही और घी का उपयोग किया जाता हैं। तथा तालाब में (पानी में) उगे हुए पसही चावल को उपयोग किया जाता है। तथा मूसल की भी पूजा की जाती है।

व्रत की तैयारियाँ पहले करनी चाहिए। इस दिन भैंस के दूध, दही, घी, तिन्नी का चावल, महुआ का पत्ता, सात प्रकार के अनाज, हल्दी, कुंकुम, अक्षत, कपूर, जनेऊ, लाल चंदन, मिट्टी के दिए, छह महुए के पत्ते के दोने, धान के लाजे, बच्चों के खिलौने, नया वस्त्र, सुहाग की सामग्री, सौंदर्य प्रसाधन, पान के पत्ते, सुपारी, नारियल, फूल और फल को इकट्ठा करके रखना चाहिए।

प्रसाद के लिए छह प्रकार के भुना हुआ अनाज, छह प्रकार की भाजी की सब्जी, भैंस का दूध, दही और घी, भुना हुआ महुआ तथा छह प्रकार के अन्न को तैयार किया जाता है। इस व्रत में छह की संख्या का अधिक महत्व है। जैसे भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष का छठवाँ दिन, छह प्रकार के भाजी, छह प्रकार के खिलौने, छह प्रकार के अन्नवाले प्रसाद, छः प्रकार के फल तथा छह कहानियाँ।

## हल छठ व्रत पूजा विधि :

बलराम जयंती के दिन महिलाएँ सुबह उठकर महूआ के पेड़ डाली से दंत मंजन करती है जो उत्तम माना जाता है। फिर स्नान करके स्वच्छ होकर पूजा की जगह को पवित्र करती है। घरों में संकेत रूप में तालाब बनाकर उसमें बेर, पलाश, गूलर आदि पेड़ों की शाखाओं को रखा जाता है। घरों में इसके लिए सुविधा नहीं है तो एक गमले में इन सब को रखकर पूजा की जाती है। इसके सामने चौकी पर एक स्वच्छ लाल वस्त्र बिछा कर उस पर कलश की स्थापना की जाती है। मिट्टी के दियों में भैंस के घी को डालकर दिया प्रज्वलित किया जाता है। उसी चौंकी पर गणेश तथा पार्वती देवी की पूजा की जाती है। गणपति को जनेऊ अर्पित किया जाता है। चौंकी के पास दीवार पर छठ माता का चित्र रचकर या छठ माता के चित्रपठ को रखकर विधि पूर्वक पूजा की जाती है। बच्चों के खिलौनों को भी रखा जाता है। हल छठ माता को नूतन वस्त्र, आभूषण और सुहागिन की सामग्री आदि को समर्पित किया जाता है। हल्दी, कुंकुम और फूल आदि से देवी की पूजा की जाती है। महुआ के पत्तों में रख कर छह प्रकार के नैवेद्य तथा नारियल और फलों को समर्पित करके, अंत में माता की आरती उतारी जाती है। पूजा संपन्न होने के पश्चात् इस व्रत की छह कथाओं का पठन और श्रवण किया जाता है। व्रत के अंत में भगवान शंकर को पति के रूप में प्राप्त करने वाली माताजी से अनंत सुख सौभाग्य की प्रार्थना विनम्रतापूर्वक की जाती है-

*"गंगाद्वारे कुशावर्ते विल्वके नीलेपर्वते।*
*स्नात्वा कनखले देवि हरं लब्धवती पतिम्।।*
*ललिते सुभगे देवि-सुखसौभाग्य दायिनि।*
*अनन्तं देहि सौभाग्यं मह्यं, तुभ्यं नमो नमः।।"*

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

# शरणागति मीमांसा

## (षष्टम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि. तापडिया
मोबाइल - 9449517879

121

श्रीमते रामानुजाय नमः

वही जब गृहस्थाश्रम को छोड़कर संन्यासी हो गया तो दूसरा धर्म हो गया। गृहस्थाश्रम में अग्निहोत्र करना उसके लिए पुण्य था संन्यासी हो जाने पर अग्निहोत्र की मनाई हो गई।

श्री देवराज गुरु कहते हैं कि महात्माओं! जब तक यह चेतन चौदह लोकों के सुखों की चाहना में रहता है तब तक सामान्य अधिकारी गिना जाता है। उस सामान्य अधिकारी के लिए शास्त्रों के द्वारा यह बताया जाता है कि यज्ञों के द्वारा, अनुष्ठानों के द्वारा देवताओं की पूजा करो तुम्हें इन्द्रलोक मिलेगा, कैलाश मिलेगा, ब्रह्मलोक मिलेगा। वही अधिकारी जब कुछ ज्यादा समझने लगता है, मुमुक्षुओं का कुछ दिन सत्संग कर लेता है तो पहली उपासना से शास्त्र उसका चित्र हटाता है और कहता है कि भाई! यज्ञों के द्वारा देवताओं को पूजा कर स्वर्ग में तुम जाओगे। परन्तु जब तुम्हारा पुण्य क्षीण हो जायेगा तब उस स्वर्ग लोक से जरूर गिरा दिये जाओगे। क्योंकि स्वर्ग, कैलाश, ब्रह्मलोक ये जितने देवताओं के लोक हैं सो सब नाशवन्त हैं। इन में जाने वालों का संसार में आवागमन बनाही रहता है। इससे भगवान श्रीपति की भक्ति उपासना करो तुम्हें परमपद मिलेगा। वहाँ से फिर कभी संसार चक्र में आना नहीं होगा। गीताजी में भगवान का श्रीमुख वचन है कि –

*ते तं भुक्त्वा स्वर्ग लोकं विशालं,*

*क्षीणे पुण्ये मर्त्य लोकं विशन्ति।*

*आब्रह्म भुवना लोक्काः पुनरावर्ति नोऽर्जुन।।*

इसका अर्थ है कि ब्रह्मलोक से लेकर जितने लोक हैं सब पुनरावर्ती हैं याने देवों को पूजकर, देवों का अनुष्ठान कर यज्ञों द्वारा देवों को प्रसन्न करके कोई भी किसी देव के लोक में यदि जाता है तो अपने पुण्य के क्षय हो जाने के बाद फिर उसे संसार चक्र में आना ही पड़ता है। कैलाश, इन्द्रलोक, ब्रह्मलोक आदि लोकों में जाने वालों का आवागमन बना ही रहता है और जो हमको प्राप्त हो जाता है सो आवागमन से रहित हो जाता है याने जो लोग शरणागति करके हमारे लोक में याने परमपद में चले जाते हैं। उनका भयंकर संसार चक्र में फिर आना नहीं होता है। वे सदा के लिए मुक्त हो जाते हैं।

*मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते।*

श्री देवराज गुरु कहते हैं कि मुमुक्षु महात्माओं! यही शास्त्र की शैली है। पहले देवों का पूजन, यज्ञों द्वारा देवों का आराधन, उसका फल देवों के लोकों की प्राप्ति सामान्य अधिकारियों के लिए सामान्य शास्त्र बतलाता है। वही अधिकारी जब कुछ काल सत्संग कर लेता है तो सत्संग किये हुए अधिकारी को शास्त्र बताता है कि

भाई! जब भगवान खुद कहते हैं कि देवलोक में जाने वालों का आवागमन बना ही रहता है। और– ''मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते'' ''यद् गत्वा न निवर्त्तन्ते तद्धाम परमं मम'' मेरे लोक में जाने वालों का फिर इस संसार चक्र में आना नहीं होता है। जहाँ जाकर फिर इस भयंकर संसार चक्र में नहीं आया जाता है वे ही मेरा परमधाम है। फिर शास्त्र कहता है कि ''तैस्तैः कामै र्हतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्य देवताः'' अनित्य चीजों की कामनाओं से जिन लोगों का ज्ञान नष्ट हो जाता है वे ही भगवान को छोड़कर अन्य देवताओं की उपासना करते हैं। ''अन्तवत्तु फलं तेषांतद्भवत्यल्प मेधसाम्'' उन अल्प बुद्धि वाले देवों की उपासना करने वालों को जो फल मिलता है सो भी नाशवान होता है। ये सब श्लोक श्री गीताजी के हैं। खुद भगवान की श्रीमुख वाणी है और अन्य शास्त्र भी कहता है किः–

*''एते बै निरयास्ततः स्थानस्य परमात्मनः''*

याने प्यारे परमात्मा का स्थान जो परमपद है वह इतना सुन्दर है, वहाँ इतना बढ़ चढ़ कर आनन्द है कि जिसके सामने ये स्वर्गादिक लोक नरक के समान हैं। विशेष सत्संग किये हुए मुमुक्षु अधिकारियों के लिए शास्त्र कहता है कि भाई! भगवान के सिवा दूसरे देवों को पूजने वालों को भगवान नष्ट ज्ञान वाले बताते हैं। देवों के द्वारा मिले हुए फलों को नाशवन्त बताते हैं। देवलोकों में जाने वालों का फिर आवागमन बताते हैं और परमपद के सुख के सामने देवलोकों के सुख को नरकवत बताया जाता है। खुद भगवान अपने श्रीमुख से ही कहते हैं किः–

*''देवान् देव यजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि''*

हे अर्जुन! देवों को यजन पूजन उपासना अनुष्ठान करने वाले देवों के लोक में जाते हैं और पुण्य नाश होने के बाद वहाँ से मृत्यु लोक में फिर गिरा दिये जाते हैं और हमारी भक्ति यजन पूजन करने वाले हमारे लोक में जाते हैं और वे लोग फिर इस संसार चक्र में नहीं आते हैं। सदा के लिए मुक्त हो जाते हैं।

श्री देवराज गुरु कहते हैं कि हे महात्माओं! इस प्रकार जब विशेष शास्त्रों के द्वारा सत्संग किया हुआ सारी बातों की छान बीन समझ लेता है तो झट सामान्य देवों का पूजन छोड़ देता है।

मन में कहता है कि पैसा भी लगावें, टाइम भी लगावें और खुद भगवान के श्री मुखवाणी द्वारा ''नष्टज्ञान'' और ''अल्प बुद्धि'' ठहराये जावें। देवलोकों में जावें तो पुण्यनाश के बाद वहाँ से गिराये जावें। फिर जन्म-मरण के चक्र में भटका करें। यह देवों का यजन और इनके द्वारा मिला हुआ फल यह क्या है? यह धर्म है या कोई बला है। वह अधिकारी पछताता है कि हाय! आजतक मेरा व्यर्थ समय निकल गया ऐसा पश्चाताप पूर्वक सब छोड़ कर और अनन्य होकर भगवान श्रीकान्त के भजने में लग जाता है और कृत-कृत्य होता है कि अब हम असली रास्ते पर आ गये। यह मार्ग अचल मिल गया। इसका फल भी परमपद है सो सदा नित्य है। इस तरह विचार-विचार कर बहुत प्रसन्न होता है। वही श्री भगवान की उपासना निष्ठ अधिकारी कुछ काल के बाद जब भक्ति और शरणागति का प्रसंग सुनता है और भक्ति की कठिनता और शरणागति की सरलता, भक्ति की अनेक शर्ते जैसे कि आदि में मन इन्द्रिय वश होने से ही उपासना पूर्णरूप से फल दे सकेगी। जिसका मन इन्द्रिय वश में नहीं होगा उसको भक्ति मुक्ति नहीं दे सकेगी। जिसका मन इन्द्रिय वश न होगा उसका कर्मयोग भी सिद्ध न होगा। जैसे कि :– ''असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः'' उसी प्रकार जिसका कर्मयोग सिद्ध नहीं होगा उसका ज्ञानयोग भी फल नहीं दे सकेगा। भलीभांति जब कि साधन स्वरूप ज्ञानयोग मिल ही न पायेगा तो फल कैसे दे सकेगा। क्योंकि कर्मयोग जिसका सिद्ध हो पायेगा उसीको तो ज्ञानयोग मिलेगा। जैसे कि– ''तत्स्वयं योग संसिद्धः कालेनात्मनि बिन्दति'' और जिनका कर्मयोग, ज्ञानयोग सिद्ध नहीं होगा उस अधिकारी को साधन स्वरूप भक्तियोग प्राप्त नहीं होगा क्योंकि शास्त्रकारों ने शास्त्रों के द्वारा इसका क्रम ही इसी प्रकार निर्णय कर रखा है। और कर्मयोग, ज्ञानयोग, भलीभांति सिद्ध हो जाने पर और भक्तियोग मिल जाने पर भी अच्छी तरह मन इन्द्रियों को वश में रख कर जो ताजिन्दगी हरवक्त अविछिन्न भगवान का स्मरण रखेगा और मरते वक्त श्री भगवान का ही स्मरण करता हुआ यदि शरीर छोड़ेगा तो उसकी गति होगी। जैसे कि –

*''अन्त कालेतु मामेव स्मरन*
*मुक्त्वा कलेवरम्।*
*यः प्रयाति त्यजन् देहं स*
*याति परमांगतिम्।''*

**क्रमशः**

# विभिन्न रूपों में भगवान गणपति

श्री गणेश भगवान जी के बारे में न जानने वाले कोई नहीं हैं। वह समस्त जनों के आराध्य देव है। गणपति एक है पर उनके भक्त करोड़ों में हैं। सभी जनों के इच्छाओं को एक-एक रूप में प्रत्यक्ष होकर सफल करते हैं। गणपति के १६ (सोलह) विभिन्न रूप हैं। गणपति का प्रत्येक रूप, भक्तों के एक-एक फल को अनुग्रह करते हैं। बालगणपति से लेकर ऊर्ध्वगणपति तक सभी अवतारों में प्रत्यक्ष होकर, अपने-अपने जीवन में नित्य उत्पन्न होने वाले, अनेक समस्याओं को परिष्कार मार्ग दिखा राह है। इस प्रकार, षोडश गणपतियों की प्रार्थना करने से अनेक प्रकार के अनंत लाभ है। गणेश चतुर्थी त्योहार के शुभ अवसर पर, यह षोडश गणपतियों का समाहार सप्तगिरि पाठकों के लिए...

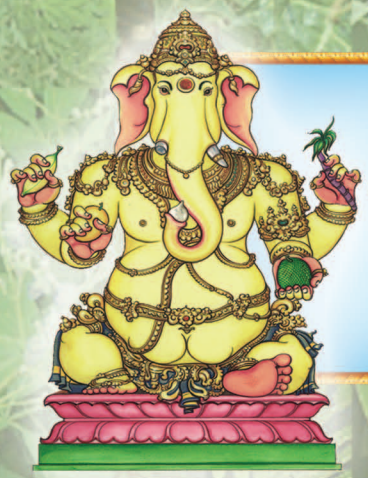

## बालगणपति

सद्बुध्दि विकास के लिए, इस बालगणपति स्वामीजी का ध्यान श्लोक नित्य ३२(बत्तीस) बार पढ़कर कर, २१(इक्कीस) बार मनसा, वाचा, कर्मणा प्रणाम करना चाहिए।

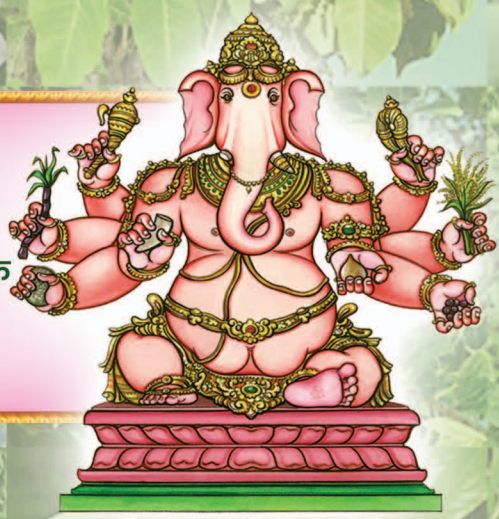

## तरुणगणपति

कार्य साधन, अत्यावश्यक कार्यदीक्षा और मनोधैर्य विकास के लिए, तरुणगणपति स्वामीजी का ध्यान श्लोक नित्य ३२ (बत्तीस) बार पढ़ना चाहिए।

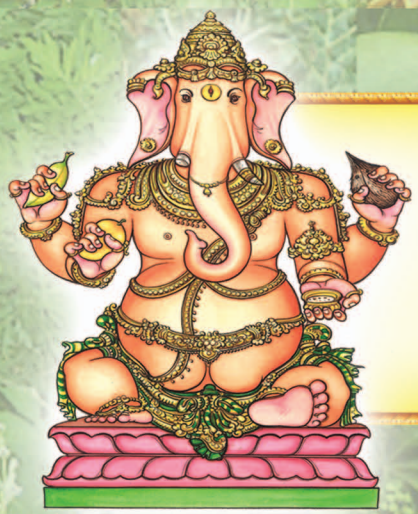

## भक्तगणपति

इस भक्तगणपति स्वामीजी की उपासना करने से, अपने हृदय में भक्तिभाव उद्भव होकर सिद्धी (ज्ञान) प्राप्त होगा।

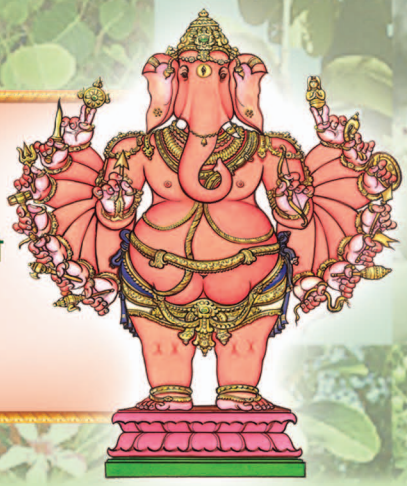

## वीरगणपति

इस वीरगणपति स्वामीजी का ध्यान और उपासना के माध्यम से भक्तों में धीरता, सूरता और वीरता का विकास बढेगा।

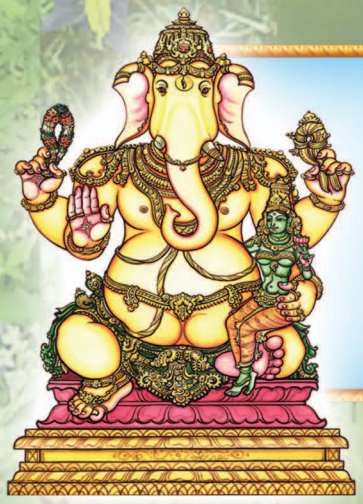

## शक्तिगणपति

इस शक्तिगणपति स्वामीजी की उपासना से आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और आत्मबल बढेगा।

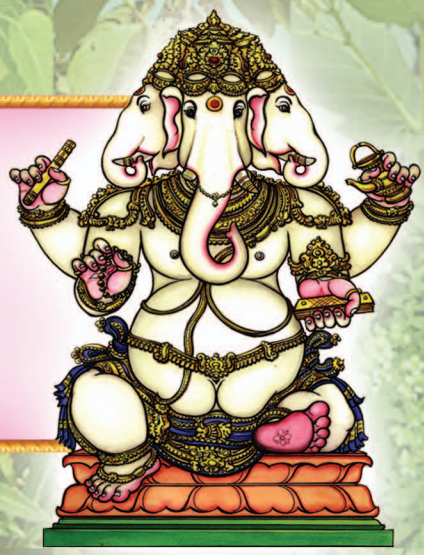

## द्विजगणपति

इस द्विजगणपति स्वामीजी की उपासना से समग्र रूप से विचार शील शक्ति प्राप्त होगी।

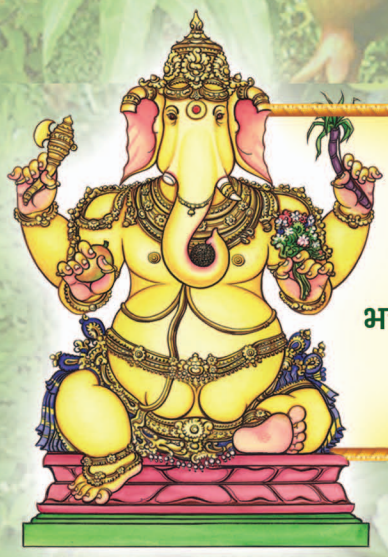

## सिद्धिगणपति

इस सिद्धिगणपति स्वामीजी की उपासना और ध्यान से, भक्तों के समस्त कार्य सफल होकर, बिना अपजय विश्व विजेता बनेगा।

## उच्छिष्ठगणपति

इस उच्छिष्ठगणपति स्वामीजी जितना शीघ्राति शीघ्र रूप से इच्छाओं को पूरे करते हैं उसी प्रकार, अश्रद्धा, संदेह, अपवित्रता, लापरवाही इत्यादि दुर्गुणों की उपासना और ध्यान को सहन नहीं कर पाता है, तुरंत कठिन से कठोर दंड देता है फिर भी दिन-बा-दिन इस उच्छिष्ठगणपति स्वामीजी की पूजा-आराधना, प्रार्थना करने वाले भक्तों की संख्या दिन-बा-दिन बढ रही है।

## विघ्नगणपति

इस विघ्नगणपति स्वामीजी की उपासाना और ध्यान से, भक्तों के समस्त विघ्न दूर होकर, सुप्रसिद्ध यश, कीर्ति और प्रशंसा प्राप्त होगा।

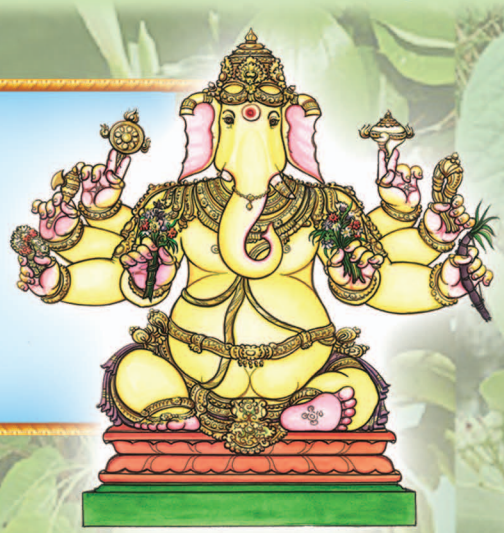

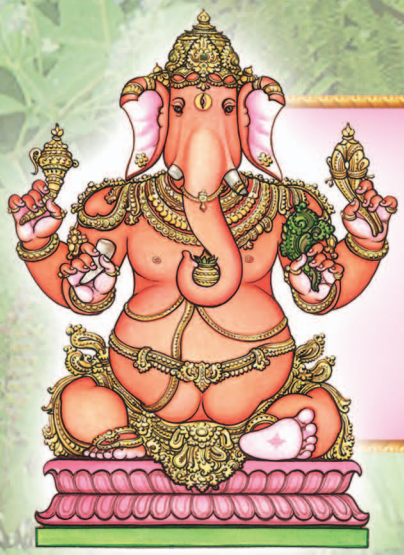

## क्षिप्रगणपति

इस क्षिप्रगणपति स्वामीजी की उपासाना और ध्यान से, भक्तों की मनोकामनाएँ पूरी होगी।

## हेरंबगणपति

इस हेरंबगणपति स्वामीजी की उपासाना और ध्यान से, भक्त, अपने प्रयाणों में अचानक उत्पन्न होने वाले दुर्घटनाओं से रक्षा प्राप्त होगी।

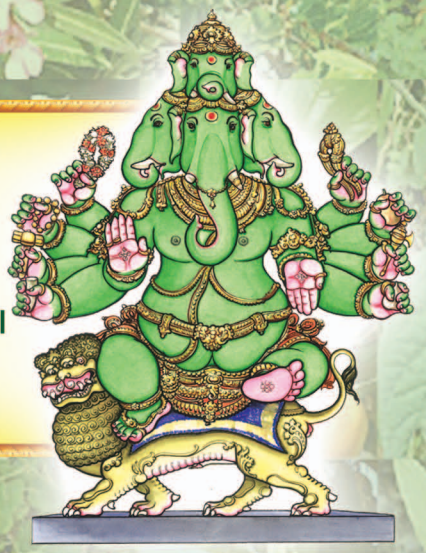

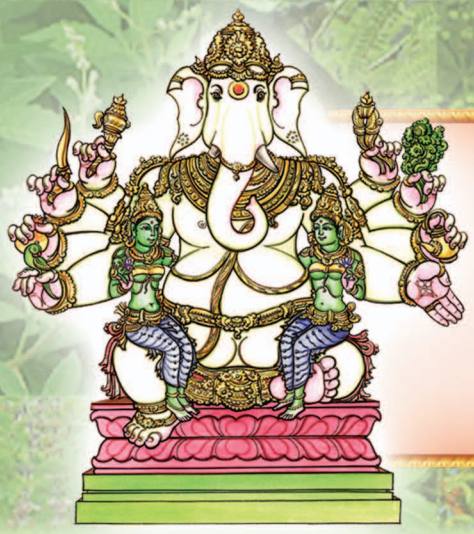

## श्री लक्ष्मीगणपति

इस श्री लक्ष्मीगणपति स्वामीजी की उपासाना और ध्यान से, भक्त, विशेष रूप से अत्यधिक धन और फसल प्राप्त होगी।

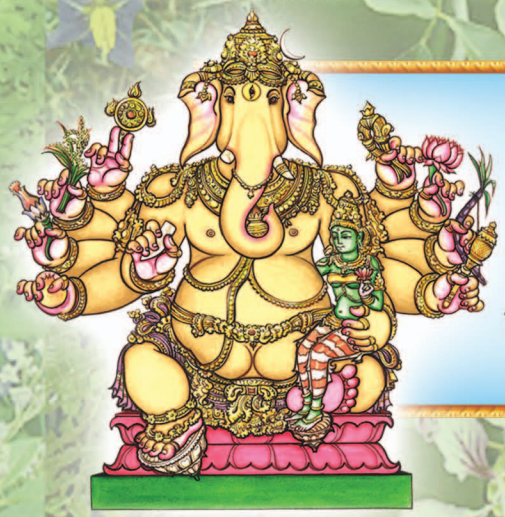

## महागणपति

इस महागणपति स्वामीजी भक्तों के प्रति कामधेनु के समान है। समस्त कष्ट-नष्टों को, बाधाओं को, समस्याओं को, दुष्ट ग्रहों से संरक्षण करने वाला महादेव है।

## विजयगणपति

इस विजयगणपति स्वामीजी की उपासना और ध्यान से, भक्तों के सभी कार्यों में दिग्विजय प्राप्त होगा।

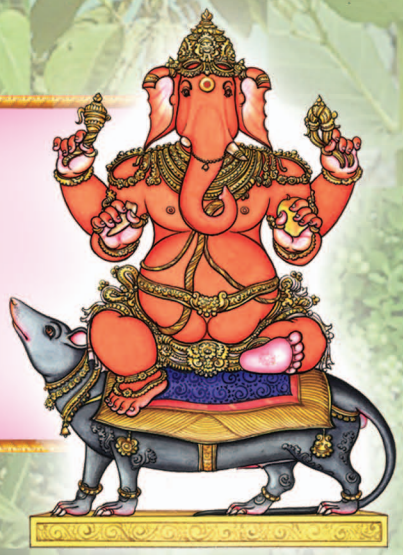

## नृत्यगणपति

कल्पवृक्ष के निचिले भाग में स्थित इस नृत्यगणपति स्वामीजी की उपासना और ध्यान से, भक्त को संतुष्टता और मनःशांति प्राप्त होगी।

## ऊर्ध्वगणपति

इस ऊर्ध्वगणपति स्वामीजी की उपासना और ध्यान से, भक्तों के समस्त घोर पाप, दीर्घ रुण, स्वास्थ्य इत्यादि बाधाओं से विमुक्ति प्राप्त होगी।

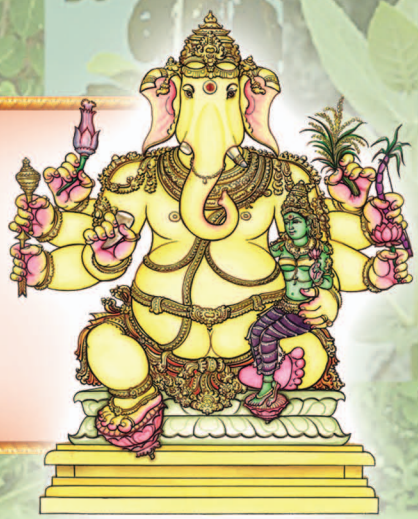

फोटो सौजन्य - श्री कंदुकूरी वेंकट सत्य ब्रह्मचार्या

# गणपति बप्पा मोरिया

- कुमारी बी.आर.गरिमा राव

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी का दिन ही गणेश जी का जन्म दिवस है और यह दिवस गणेश चतुर्थी के नाम से भी प्रसिद्ध है। भारत में ही नहीं देश-विदेश में जहाँ भी देखो यह पर्व अत्यंत संभ्रम, श्रद्धा और आनंद के साथ मनाया जाता है। एक ओर मंदिरों में गणेश मंत्र -

*''शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।*
*प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।''*

सुनाई पड़ता है तो दूसरी ओर सार्वजनिक स्थलों में प्रतिष्ठित बृहद् गणेश प्रतिमाओं के सामने ''गणपति बप्पा मोरिया, मंगल मूर्ति मोरिया।'' जयघोष, हर तरफ गूंज उठता है। घर-घर में विधिवत् पूजा हो रही है। 'ओम् गजाननाय नमः', 'ओम् गणाध्यक्षाय नमः' 'ओम् विघ्न राजाय नमः' गणेश मंत्र उच्चरित हो रहे हैं। इस पवित्र दिन के सुअवसर पर सबके आराध्य देवता श्रीगणेश का जन्म, गणाध्यक्ष बनना, चंद्रमा को शाप देना, शमंतकमणि की कथा, गणेशजी की पूजा के विधि-विधान और गणेश प्रतिमा का विसर्जन आदि पर विचार किया जायेगा।

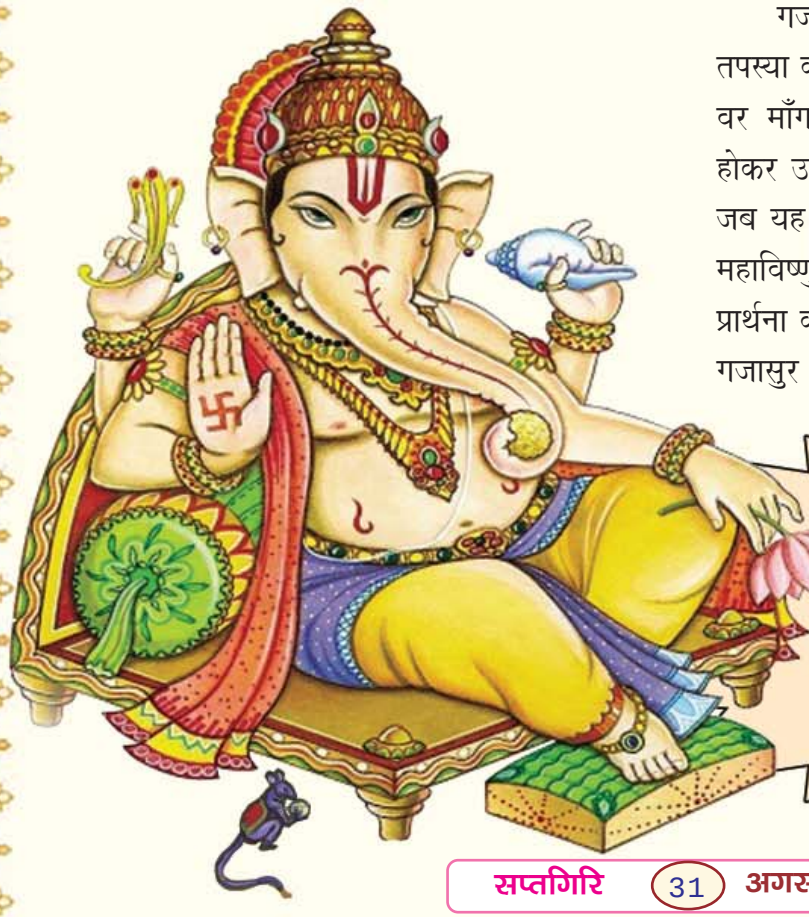

## गणेशजी की सनातनता :

भगवान गणेश की पूजा ऋग्वेद काल से भी प्रचलित है। भगवान गणेश की महिमा के बारे में उल्लेख वेद, उपनिषद्, पद्म पुराण, लिंग पुराण, स्कन्द पुराण, ब्रह्म वैवर्त पुराण, शिव पुराण, वराह पुराण आदि अनेक पुराणों में और अनेक धार्मिक ग्रंथों में प्राप्त होता है। इन अनेक ग्रंथों में भगवान गणपति को सहस्र नामों से स्तुति की गई है। वे हिंदू धर्म के 5 प्रमुख देवताओं में एक माने गये है। ऋग्वेद में श्री गणपति का उल्लेख इस प्रकार है-

*''गणानं त्वा गणपतिं हवामहे*
*कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।*
*ज्येष्ठराजं ब्रह्मणाम् ब्रह्मण स्पंद आ नः शृण्वन्नूतिभिः*
*सीदसनम् ॐ महागणाधिपतये नमः।।''*

उपर्युक्त श्लोक में श्री गणेश को देवताओं में श्रेष्ठ गणपति और विद्वानों का विद्वान तथा सब में श्रेष्ठ (सब से उत्तम) तथा 'ब्रह्मणस्पते' कहा गया है।

## गणपति का जन्म रहस्य :

गजासुर नामक एक असुर ने भगवान शिव की तपस्या करके हमेशा के लिए उसके पेट में वास करने का वर माँगा। भगवान भोलेनाथ उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर उसकी इच्छा के अनुसार उसके पेट में चले गए। जब यह विषय पार्वती माता को ज्ञात हुआ, उसने तुरंत महाविष्णु के पास जाकर शिवजी को वापस लाने की प्रार्थना की। महाविष्णु अपना वेश बदलकर नंदी के साथ गजासुर के पास गये। नंदी ने वहाँ खूब नाचा। इससे

संतुष्ट होकर गजासुर ने वर मांगने को कहा। तब महाविष्णु नंदी के द्वारा शिव को वापस कैलाश भेजने की प्रार्थना करवाते हैं। गजासुर इससे सहमत होते हैं। नंदी गजासुर के पेट को चीरता है और महाशिव पेट से बाहर निकलते हैं। इस प्रकार शिव भगवान के प्रकट होने के साथ-साथ गजासुर की मृत्यु भी होती है।

यहाँ कैलाश पर्वत पर माता पार्वती नहाने के लिए तैयार हो गई। कैलाश पर्वत पर कोई भी नहीं थे, इसलिए माता ने अपने शरीर के मैल से एक बच्चे की पुतली को तैयार करके, उसमें प्राण डाले। उसने एक बच्चे का रूप धारण किया। जिसे माता पार्वती ने अपना पुत्र माना। माता ने अपने पुत्र को कैलाश के द्वार पर खड़ा करके किसी को अंदर नहीं आने देने की आज्ञा दी। उसी समय वहाँ महाशिव का आगमन होता है। माता के कहने के अनुसार यह बालक महाशिव को भी अंदर नहीं आने देता है। इससे क्रुद्ध होकर महाशिव ने अपने त्रिशूल से बालक के सिर को काट दिया। तभी माता पार्वती नहाके बाहर आती है और इस दृश्य से भयभीत तथा दुःखित हो जाती है। वे महाशिव से अपने पुत्र के प्राण को वापस चाहती है। महाशिव भी दुखी होते हैं। अपने गणों को उत्तरी दिशा की ओर सिर रखकर सो रहे किसी भी प्राणी के सिर को वहाँ लाने की आज्ञा देते हैं। वे गण उत्तरी दिशा की ओर सिर रखकर सो रहे एक हाथी के सिर को काट कर लाते हैं। तब महाशिव उस हाथी के सिर को उस बच्चे के घड़ से जोड़ देते हैं, जिससे बच्चा पुनर्जीवित होता है। माता पार्वती को अपार आनंद मिलता है। गज के सिर से इसलिए वे 'गजानन' कहलाये। एक और अन्य मान्यता के अनुसार महाशिव ने गजासुर के सिर को इस बालक के शरीर से जोड़ा था। उस दिन भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी तिथि थी।

### गणाध्यक्ष बनना :

देवताओं के गण के अध्यक्ष के लिए तथा सब देवताओं की पूजा स्वीकार करने के लिए अर्थात् प्रथम पूज्य बनाने के लिए एक स्पर्धा का आयोजन किया गया। भगवान गणेश तथा कुमारस्वामी ने इस स्पर्धा में भाग लिया। स्पर्धा यह थी कि इन दोनों में से जो भी पृथ्वी की परिक्रमा करके सभी पवित्र नदियों में स्नान करके सबसे पहले कैलाश पर आएगा, वह गणाध्यक्ष तथा प्रथम पूज्य बनेगा। शर्त अनुसार तुरंत कुमारस्वामी अपने वाहन मयूर पर बैठकर पृथ्वी की ओर चले पड़े। भला, स्थूल काया गणेश अपने छोटे से वाहन चूहे पर सवार होकर कैसे परिक्रमा कर सकते हैं? यहीं गणेश भगवान ने अपनी चतुरता दिखाई। उन्होंने अपनी चतुर मति से भक्ति के साथ अपने माता-पिता अर्थात् गौरी-शंकर की तीन बार परिक्रमा की। गणेशजी का विश्वास था कि माता-पिता के चरणों में ही संपूर्ण ब्रह्मांड होता है। इससे यह अद्भुत हुआ कि यहाँ पृथ्वी पर कुमारस्वामी जिस पवित्र नदी के पास गये वहाँ उनको ऐसा दिखाई दिया कि गणेशजी उससे पहले वहाँ आ चुके हैं। सब पवित्र नदियों में नहाकर कुमारस्वामी कैलाश पर्वत पर आए, तो उन्होंने देखा कि गणेश भगवान वहाँ पहले से उपस्थित हैं। कुमारस्वामी ने अपनी पराजय को स्वीकार किया और गणपति को गणों के अधिपति तथा प्रथम पूज्य बनने के लिए सहमत हो गए। तब से गणेशजी सब देवताओं के अध्यक्ष बने तथा उनको सब कार्यों में सबसे पहले प्रथम पूज्य होने का अधिकार दिया गया। इसी कारणवश जब कभी किसी कार्य को या देवताओं की पूजा आरंभ करने से पहले गणेश की पूजा की जाती है और यह एक ऐसा रिवाज बन गया है कि किसी कार्य को आरंभ करने को 'श्री गणेश' कहा जाने लगा। अब गणेश को भक्ति के साथ गणपति, गणनायक और गणाध्यक्ष आदि नामों से स्तुति की

जाने लगी। कुछ लोगों का मत है कि गणपति जब अध्यक्ष बने, वह दिन भी भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी तिथि थी।

### चंद्र को शाप देना :

देवताओं में मेलमिलाप और नोक-झोंक होती है। ऐसी एक नोक-झोंक एक हिंदू के रीति-रिवाज का कारण बना है। गणेश की कथा में यह अत्यंत मुख्य कथा है। गणेश गणाध्यक्ष बनने के बाद सभी उनको मर्यादा देने लगे और गणेशजी को खूब भोजन करवाया गया। जिससे उन की तोंदू निकल आयी। एक बार पेट के वजन से लंबोदर ठीक तरह से चल नहीं पाए और गिर पड़े। ऐसे समय लंबोदर को देखकर शंकर के सिर पर आसीन चंद्र हसने लगे। गणेश ने क्रुद्ध होकर चंद्र को शाप दिया कि जो भी चंद्रमा के दर्शन करेगा उसे किसी निंदा का शिकार होना पडेगा। परंतु इस शाप से सारी दुनिया में हाहाकार मच गया। क्योंकि चंद्रमा के दर्शन के बिना लोग कैसे जीएंगे। सब देवता तथा मनुष्यों ने भगवान गणेश से प्रार्थना की। अपने शाप को वापस लेने की विनति की। चंद्र ने भी अपनी गलती को समझकर गणेश से क्षमा मांगी। पर अब स्वयं गणेश भी इस शाप को पूर्ण रूप से वापस नहीं ले सकते थे। इसलिए उन्होंने अपने शाप में थोडा परिवर्तन किया। गणेश ने कहा, ''जो कोई केवल गणेश चतुर्थी के दिन चंद्र को भूल से भी देखेगा तो उसे निंदारोप (झूठा आरोप) का शिकार होना पडेगा।'' शाप की शक्ति इतनी थी कि चाहे वह स्वयं भगवान भी क्यों ना हो, बच नहीं पाता था। तब से गणेश चतुर्थी के दिन कोई भी चंद्र को नहीं देखते थे। भगवान श्रीकृष्ण भी इस शाप के शिकार हुए। आगे इस शाप विमोचन की एक और मजेदार कथा है। जो श्रीकृष्ण और शमंतकमणि की कथा के रूप में प्रचलित है।

### शमंतकमणि की कथा :

सत्राजित नामक यादव राजा ने सूर्य भगवान की तपस्या करके शमंतकमणि नामक एक अत्यंत तेजस्वी मणि को प्राप्त किया जो हर रोज आठ भारू सोना देती थी। श्रीकृष्ण ने प्रजा की सेवा के लिए एक बार उससे उस मणि को माँगा। परंतु सत्राजित ने उसे अपने भाई प्रसेनजित को दे दिया। उस मणि को पहन कर एक दिन प्रसेनजित शिकार करने जंगल चले। तब एक सिंह उसका वध करके उस मणि को ले जा रहा था, जांबवंत ने सिंह को मार कर उस मणि को प्राप्त करके उस मणि को अपनी पुत्री जांबवति को दिया। इस घटना से सत्राजित अनभिज्ञ था। प्रसेनजित के अपनी नगरी द्वारिका को नहीं लौटने पर सत्राजित ने शक करके उस दोष को कृष्ण पर डाला। उसे शक था कि श्रीकृष्ण ने ही प्रसेनजित का वध करके उस मणि को ले लिया है। शक की निगाह में रहनेवाले श्रीकृष्ण उस दिन गणेश चतुर्थी होने से चंद्रमा को नहीं देखना चाहते थे। परंतु दूध सेवन के समय दूध में से चंद्रमा की परछाई दिखाई दी। चंद्रमा के दर्शन से झूठा आरोप श्रीकृष्ण पर पड़ा। अपनी सच्चाई को साबित करने के लिए श्रीकृष्ण को जंगल जाकर जांबवंत से 27 दिनों तक युद्ध करना पड़ा। अंत में जांबवंत को एहसास हुआ कि यहाँ जो व्यक्ति है, वे और कोई नहीं, स्वयं श्रीराम का ही अवतार है। इसलिए उसने शमंतकमणि को और अपनी पुत्री जांबवती को भी कृष्ण को सौंपा। श्रीकृष्ण ने उस मणि को सत्राजित को वापस दे दिया। अपनी गलती से पश्चात्ताप होकर सत्राजित ने अपनी पुत्री सत्यभामा को श्रीकृष्ण से विवाह कराने का निश्चय किया। श्रीकृष्ण भी गणेश चतुर्थी का व्रत करके कलंक से दूर होकर सत्यभामा और जांबवती से शादी करके आनंद से रहने लगे।

गणेश चतुर्थी के दिन अगर कोई गलती से चंद्रमा को देखता है तो गणपति पूजा के पश्चात शमंतकमणि कथा का श्रवण करके इस मंत्र को पढने से शाप मुक्त हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है--

*''सिंहः प्रसेन मण्वधीत्सिंहो जाम्बवता हतः।*
*सुकुमार मा रोदीस्तव ह्येषः स्यमन्तकः।।''*

ऐसा करने से चंद्र को देखने के दोष से मुक्त होकर सुख शांति से जी सकते हैं और लोगों की मनोकामनाएँ पूरी हो जाती हैं।

## परशुराम के क्रोध को कम करना, एकदंत बनना :

एक बार परशुराम का आगमन कैलाश पर होता है। तब गणाध्यक्ष माता-पिता की सेवा में निरत थे। पिता ईश्वर की अनुमति के बिना वे परशुराम को अंदर नहीं जाने देते। इसलिए परशुराम क्रुद्ध होकर अपने आयुध परशु से गणेश के एक दंत को तोड कर टुकड़ा कर देते हैं। इससे गणपति 'एकदंत' भी कहा जाता है। यह सब देख कर माता पार्वती को बहुत गुस्सा आता है। भगवान गणेश परिस्थितियों को अच्छी तरह जानते हुए होनेवाले परिणामों को दृष्टि में रखकर सर्वप्रथम वे अपनी माता को शांत करते हैं। फिर परशुराम से क्षमा मांगने की विनति करते हैं कि परशुराम से कुछ कहने से पूर्व अपनी माता को शांत करके परशुराम को क्षमा करने की प्रार्थना करते हैं। गणेश की दृष्टि में दूसरों को क्षमा करना भी एक वीर का ही लक्षण है। गणेश जी के इस व्यवहार से परशुराम अपनी भूल को समझ लेते हैं। वे प्रसन्न होकर गणेशजी को अपना परशु देते हैं और वहाँ से चले जाते हैं। यह होता है एक वीर, शूर व्यक्ति का संयमित व्यवहार। ऐसे व्यक्ति को कोई भी अपना नायक अनायास ही मानते हैं। इतना ही नहीं गणेश प्रथम पूज्य होने पर भी माता-पिता को पूर्ण सम्मान देते थे।

## काम में मग्न हो जाना तथा निस्वार्थता :

हमारे सनातन धार्मिक ग्रंथों के अनुसार वेदव्यास जी ने भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी से लेकर भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी तक महाभारत कथा को बिना रुकावट के गणेश जी को सुनाया था। प्रभु गणेश भी निर्बाध गति से, एकाग्र चित्त से 10 दिनों तक एक आसन पर बैठ कर अपने एक दंत को कलम बनाकर महाभारत को लिपिबद्ध किया था। वे इस काम में इतना मग्न हो गये थे कि स्वयं को थकान भी महसूस नहीं हुई। उनके लेखन की शक्ति भी अद्भुत थी। 10 दिनों के बाद वेदव्यास जी देखते हैं कि गणेशजी बहुत थक चुके हैं और उनके शरीर का तापमान बहुत बढ़ गया है। इसलिए वेदव्यास ने गणेश को एक कुंड पानी में डुबो कर शरीर को ठंडा किया था। इसी कारण से गणेश उत्सव के समय चतुर्थी को गणेश की स्थापना करके चतुर्दशी को उसके शरीर को ठंडा करके बाद में पानी में विसर्जित किया जाता है। यह गणेश जी के स्थिर चित्त तथा संयम को स्पष्ट करता है। वेदव्यास से किसी फल की कांक्षा किए बिना गणेश जी ने इतना बडा बृहद कार्य को किया था। गणेश जी की एकाग्रता तथा निस्वार्थता का प्रतीक है। जिसे हरेक मनुष्य को अपनाना चाहिए।

## गणेश चतुर्थी व्रत :

गणेश चतुर्थी के दिन गणेश के मंदिरों में अद्भुत अलंकार के साथ-साथ गणपति की विशेष पूजा की जाती है। अभिषेक संपन्न होने के बाद भगवान को पुष्पों से सजाया जाता है। नूतन वस्त्र तथा आभूषण पहनाये जाते हैं। विशेष रूप से मोदक(लड्डू) को भोग के रूप में चढ़ाया जाता है और आरती उतारी जाती है। अर्चकों से वेद मंत्रों का पाठन किया जाता है और भक्तों से गणपति भगवान के गीतों, कीर्तनों का गायन तथा भजन किये जाते हैं। सामूहिक स्थलों में गणेश चतुर्थी के दिन बड़े-बड़े मूर्तियों की स्थापना की जाती है। विधि पूर्वक अनुष्ठान किया जाता है। सुबह और शाम को आरती की जाती है। उत्सव समाप्त होने तक अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है और लोग भगवान के दर्शन तथा पूजा करने के लिए आते है। चारों ओर भक्तिभाव छा जाता है। हर रोज प्रसाद वितरित किया जाता है। इस त्योहार में भक्ति और श्रद्धा, उल्लास, उमंग आदि भावनाएँ एक साथ दिखाई पड़ते हैं। बच्चे, तो उत्सव समाप्त होने तक अपने समीप के गणेश के यहाँ सेवा करते हुए अपने आप को धन्य समझते है।

## गणेश चतुर्थी का पूजा-विधान :

भारत के सभी प्रांतों में तथा सभी घरों में भगवान गणपति के व्रत को एक अनुष्ठान के रूप में भक्ति पूर्वक

किया जाता है। दक्षिण भारत में गणेशजी के साथ माता गौरी की भी पूजा की जाती है। इसलिए चतुर्थी के 2 दिन पहले गणेशजी और माता गौरी की मिट्टी की प्रतिमाओं को घर में घंटा नाद के साथ लाया जाता हैं। द्वारों को आम के पत्तों के तोरण बांधे जाते हैं। इस के पहले ही गणेश की पूजा के लिए जो सामग्री चाहिए उसे ले आकर एक कोने में रखी जाती है। चतुर्थी के पहलेवाले दिन को गौरी की पूजा की जाती है। दूसरे दिन गणपति बप्पा की पूजा की जाती है।

गणेश पूजा के दिन सुबह पहले स्नानादि कामों से निवृत्त होकर पूजा करने की जगह को पवित्र किया जाता है। एक चौकी बनाकर उस पर शुभ्र वस्त्र डाल कर और उस पर चावल और धन रखकर गणेश और गौरी की प्रतिमाएँ रखी जाती हैं। कलश की स्थापना भी की जाती है। दीप प्रज्वलन और संकल्प, पूजा प्रारंभ होने से पूर्व किये जाते हैं। फिर उसके बाद भगवान की प्राण प्रतिष्ठा करके षोडषोपचार पूजा की जाती है। अर्थात् 16 उपचारों के साथ भगवान की भक्ति पूर्वक पूजा की जाती है। वे ये हैं- भगवान को आवाहन करके सिंहासन, अर्घ्यं, पाध्यम, आचमनीयम, पंचामृत स्नानम्, शुद्धोदक स्नानम्, वस्त्र युग्मं, उपवीतम्, गंधाक्षतान, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, दक्षिणा, पांच प्रकार के फल और नारियल आदि भगवान को समर्पित किये जाते हैं। एक-विंशति (21) गणेश नाम-पूजा के बाद अंग पूजा की जाती है। विविध तरह के फूलों से पूजा की जाती है। अर्क पुष्प और पत्र श्री विनायक पूजा में श्रेष्ठ माना जाता है। कहा जाता है कि गणेशजी को दूर्वाग्र पूजा करने से वे प्रसन्न होते हैं। 21 तरह के विभिन्न पत्रों की पूजा की जाती है। श्री विनायक अष्ठोत्तर शतनाम पूजा करके मोदक प्रिय गणेश को मोदकों का नैवेद्य चढ़ाया जाता है। अंत में मंगलारति उतारी जाती हैं। इस मंत्र का उच्चारण करते हुए भगवान परिक्रमा नमस्कार किया जाता है-

*''वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।*
*निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।''*

इस तरह निष्ठा के साथ पूजा करने से गणेश भगवान अति प्रसन्न होते हैं। कष्टों और विघ्नों का निवारण होकर भक्तों की इष्टार्थ सिद्धि होती है। पूजा के बाद चंद्र के शाप की कथा और शमंतकमणि की कथा का श्रवण किया जाता है।

## गणेश जी का विसर्जन :

विधि-विधान के साथ प्रिय और आदि पूजित गणनायक भगवान गणेश का विसर्जन एक शुभ मुहूर्त में नियमित तरीके से किया जाता है। भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को गणेश की स्थापना की जाती है तथा भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी अर्थात् अनंत चतुर्दशी को उनका विसर्जन किया जाता है। घरों में मोदक प्रिय को 1 या 3 या 5 दिनों के बाद विसर्जन किया जाता है। लेकिन जो लोग पूरे 10 दिनों के लिए गणपति को अपने घर में रखते हैं, वे गणेश विसर्जन को अनंत चतुर्दशी के ही दिन करते हैं। विसर्जन के शुभ समय में गणपति की पुनःपूजा की जाती है। नैवेद्य चढ़ाने के बाद आरती उतारी जाती है। निम्न लिखित श्लोक को पढ़ते हुए भगवान को पुनः अगले साल आने की प्रार्थना करके विसर्जन किया जाता है–

*''ॐ यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।*
*इष्टकामसमृद्धयर्थं पुनर्अपि पुनरागमनाय च।।''*

सभी देवगण! मेरे द्वारा की गई पूजा को स्वीकार करे। अभीष्ट कामनाओं की समृद्धि के लिए फिर लौट आइए।

*''गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।*
*मम पूजा गृहीत्मेवां पुनरागमनाय च।।''*

सुर श्रेष्ठ परमेश्वर! अपने स्वस्थान को लौट जाइए। फिर से पूजा स्वीकार करने के लिए पुनः हमारे घर आइए।

मंदिरों में तथा सार्वजनिक स्थलों में स्थापित की गई बड़े-बड़े गणेश की मूर्तियों को 10 दिन के गणेषोत्सव के

बाद शुभ मुहुर्त में विसर्जित किया जाता है। अनंत चुतर्दशी के दिन को विसर्जन करने के पीछे के कारण की कथा को हम ऊपर पढ चुके हैं। गणेश विसर्जन का उत्सव पहले केवल घरों तक सीमित था। इसका सार्वजनिक रूप से करने का आरंभ छत्रपति शिवाजी से माना जाता है। बाद में स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों के विरुद्ध जनता को एकत्रित करने के लिए बाल गंगाधर तिलक ने महाराष्ट्र में गणेश उत्सव को आरंभ किया। तब से अब तक यह परंपरा चली आ रही है। आजकल यह गणेषोत्सव तथा विसर्जन देशभर में मनाया जाता है। जगह-जगह से गणपति बप्पा की विसर्जन यात्रा निकलती है। गणेश भगवान की पूजा आरती के बाद मुख्य रास्तों में शोभायात्रा निकाली जाती है। यह शोभायात्रा बहुत ही शोभायमान तथा भव्य दिखाई पड़ती है। जाति-पांति को भूलकर लाखों संख्या में स्त्री-पुरुष, बुढ़े-बच्चे सब उत्साह और भक्ति के साथ इस में भाग लेते हैं। इस जुलूस में भगवान गणपति के आगे लोग नाचते, गाते, डोल बजाते, जोश से आगे बढ़ते हैं। चारों ओर श्रद्धालुओं से गणेश के प्रति जयजयकार प्रतिध्वनित होता है। ऐसा भास होता है कि स्वयं गणेश बप्पा वहाँ मौजूद है और सबको आशीर्वाद कर रहे है। इस शोभायात्रा के बाद भक्तों से श्री गणेश को पानी के पास ले जाकर नमी आंखों से अगले साल फिर से जल्दी आने की प्रार्थना करते हुए- ''गणपति बप्पा मोरिया, अगले बरस तू जल्दी आ।'' जयकार करते हुए विधि-विधान के साथ भगवान को पानी में विसर्जित किया जाता है। इस विसर्जन से गणेश उत्सव समापन होता है।

जो भगवान गणेश की भक्तिपूर्वक पूजा करता है, सारे विघ्न दूर होकर उसके हर एक काम में सफलता प्राप्त होती हैं तथा सारी मनोकामनाओं की पूर्ति होती है।

# भो गणनायक

राग : पूर्विकल्याणी  ताल : आदि

**पल्लवी**

भो गणनायक! त्वाम् प्रणमाम्यहम्।
विघ्न-निवारणाय प्रार्थयाम्यहम्।

**अनुपल्लवी**

तव शुभचरितं अतीव सुंदरम्,
अनुकरणीयं सर्वैः अनुसरणीयम्।।

**चरणम्**

मातृवचनरक्षणाय स्वशिरः समर्पितवान्,
माता-पिता-सेवनेन मधुरफलं प्राप्तवान्,
महाबुद्धिबलेन आत्मलिंगं रक्षितवान्,
मूषकसख्येन निम्नजीवमपि उद्धृतवान्।।

**मध्यमकालसाहित्यम्**

सुन्दरशीघ्रलेखनकलया महाभारतं लिखितवान्।
सुरनरकामितफलं प्रदाय सद्भक्तान् अनुग्रहीतवान्।
सुजनआर्तवाणीं प्रति सत्वरं अभयवाणीं श्रावितवान्।
सुधाभरित-तव कृपां कुरु मयि, पाहि पाहि भो दयावान्!

- श्रीमती आर.वाणिश्री

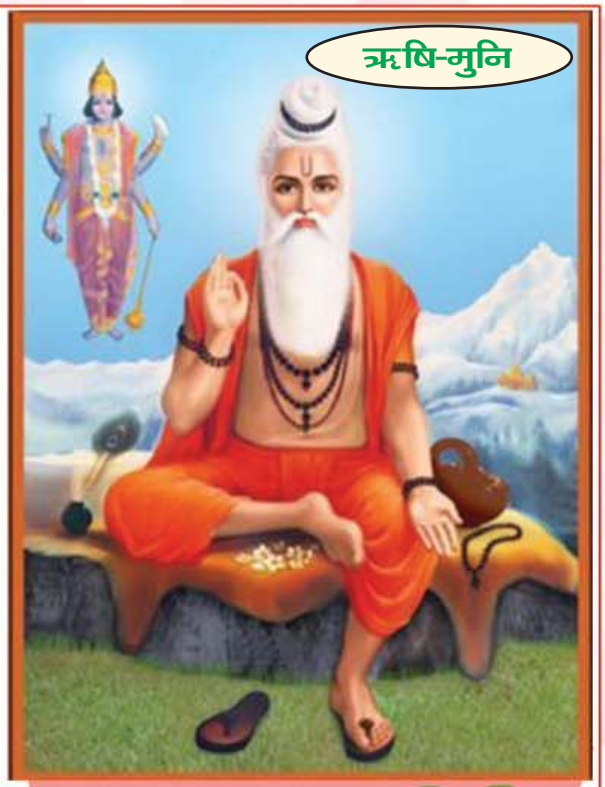

# भृगु महर्षि

- डॉ.जी.सुजाता, मोबाइल - 9494064112.

हिन्दू धर्म की पौराणिक मान्यताओं के अनुसार ब्रह्म ने अपने मन से 14 पुत्रों को जन्म दिया। जिन्हें ब्रह्म मानसपुत्र कहा जाता है। महर्षि भृगु ब्रह्माजी के मानस पुत्रों में से एक हैं। महर्षि भृगु को भी सप्तर्षि मंडल में स्थान मिला है। इनके बारे में कहा जाता है कि वे सावन और भाद्रपद के महीने में सूर्य के रथ पर सवार रहते हैं।

ऋग्वेद के कुछ मंत्रों के रचयिता भी है भृगु। महर्षि भृगु तथा उनके वंशधर अनेक मन्त्रों के दृष्टा हैं। ऋग्वेद में भृगु वंशी ऋषियों द्वारा रचित अनेक मंत्रों का वर्णन मिलता है, जिसमें वेन, सोमाहुति, स्यूमरशिम, भार्गव, आर्वि आदि का नाम आता है। महर्षि भृगु के वंशज 'भार्गव' कहलाते हैं। भार्गवों को अग्निपूजक माना गया है। आज भी उनके वंशजों की संख्या बहुतायत में हैं।

भृगु ने ही भृगु संहिता की रचना की। उसी काल में उनके भाई और गुरु स्वायंभुव मनु ने मनुस्मृति की रचना की थी। भृगु अपने गुरु मनु के लिखे मनुस्मृति को संरक्षित और संवर्धित करने के लिए जाना जाता है। इनके द्वारा रचित कुछ अन्य ग्रंथ हैं 'भृगु स्मृति' (आधुनिक मनुस्मृति) 'भृगु संहिता' (ज्योतिष), 'भृगु संहिता' (शिल्प), 'भृगु सूत्र', भृगु उपनिषद्', 'भृगु गीता' आदि। 'भृगु संहिता' आज भी उपलब्ध है जिसकी मूल प्रति नेपाल के पुस्तकालय में ताम्रपत्र पर सुरक्षित रखी है। भारतवर्ष में भी कई हस्तलिखित प्रतियाँ पंडितों के पास उपलब्ध हैं किंतु वे अपूर्ण हैं। भृगु का उल्लेख शिव पुराण और वायु पुराण में मिलता है, जहाँ उन्हें दक्ष प्रजापति (उनके ससुर) के महान यज्ञ के दौरान उपस्थित दिखाया गया हैं।

## महर्षि भृगु का जीवन

वेद-पुराणों के अनुसार बताया जाता है कि महर्षि भृगु का जन्म 5000 ई. पूर्व ब्रह्मलोक-सुषानगर (वर्तमान ईरान) में हुआ था। इनके परदादा का नाम मरीचि ऋषि था। दादाजी का नाम कश्यप ऋषि, दादी का नाम अदिति था। इनके पिता प्रचेता-विधाता जो ब्रह्मलोक के राजा बनने के बाद प्रजापिता ब्रह्म कहलाये। महर्षि भृगु जी की माता का नाम वीरणी देवी था। ये अपने माता-पिता से सहोदर दो भाई थे। बडे भाई का नाम अंगिरा ऋषि था। जिनके पुत्र बृहस्पतिजी हुए जो देवगणों के पुरोहित और देवगुरु के रूप में जाने जाते हैं।

महर्षि भृगु की दो पत्नियों का उल्लेख आर्ष ग्रन्थों में मिलता है। इनकी पहली पत्नी दैत्यों के अधिपति हिरण्यकश्यप की पुत्री दिव्या थी। जिनसे उनके दो पुत्रों क्रमशः शुक्र और त्वष्टा का जन्म हुआ।

सुषानगर (ब्रह्मलोक) में पैदा हुए महर्षि भृगु के दोनों पुत्र विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। बड़े पुत्र काव्य खगोल ज्योतिष, यज्ञ - कर्मकाण्डों के निष्णात विद्वान हुए। मातृकुल में आपको आचार्य की उपाधि मिली। आचार्य बनने के बाद शुक्र को शुक्राचार्य के नाम से जाना गया। ये जगत में शुक्राचार्य के नाम से विख्यात हुए।

दूसरे पुत्र त्वष्टा वास्तु के निपुण शिल्पकार हुए। त्वष्टा को शिल्पकार बनने के बाद विश्वकर्मा के नाम से जाना गया। अपनी पारंगत शिल्प दक्षता से ये भी जगद्विख्यात हुए। इन्हीं भृगु मुनि के पुत्रों को उनके मातृवंश अर्थात् दैत्यकुल में शुक्र को काव्य एवं त्वष्टा को मय के नाम से जाना गया है।

महर्षि भृगु की दूसरी पत्नी दानवों के अधिपति पुलोम ऋषि की पुत्री पौलमी थी। इनसे भी तीन संतान हुई। पुत्र च्यवन और ऋचीक तथा एक पुत्री हुई जिसका नाम रेणुका था। बड़े पुत्र च्यवन का विवाह मुनिवर ने गुजरात भड़ौंच (खम्भात की खाड़ी) के राजा शर्याति की पुत्री सुकन्या से किया। भार्गव च्यवन और सुकन्या के विवाह के साथ ही भार्गवों का हिमालय के दक्षिण पदार्पण हुआ। च्यवन ऋषि खम्भात की खाड़ी के राजा बने और इस क्षेत्र को भृगु कच्छ-भृगु क्षेत्र के नाम से जाना जाने लगा।

ऋचीक का विवाह महर्षि भृगु ने गाधिपुरी (वर्तमान उ.प्र. राज्य का गाजीपुर जिला) के राजा गाधि की पुत्री सत्यवती के साथ एक हजार श्यामवर्ण घोड़े दहेज में देकर किया। पुत्री रेणुका का विवाह भृगु मुनि उस समय विष्णु पद पर आसीन विवस्वान (सूर्य) के साथ किया।

आज भी भड़ौच में नर्मदा के तट पर भृगु मन्दिर बना है। अब भार्गव ऋचीक भी हिमालय के दक्षिण गाधिपुरी (वर्तमान गाजीपुर जिले का भूभाग) आ गये। महर्षि भृगु के इस विमुक्त क्षेत्र में आने के कई कथानक आर्ष ग्रन्थों में मिलते हैं।

## भृगु महर्षि की पत्नी का वध

पौराणिक, ऐतिहासिक आख्यानों के अनुसार ब्रह्म-प्रचेता पुत्र भृगु द्वारा हिमालय के दक्षिण दैत्य, दानव और मानव जातियों के राजाओं के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर मेल जोल बढ़ाने से हिमालय के उत्तर की देव, गन्धर्व, यक्ष जातियों के नृवंशों में आक्रोश पनप रहा था। जिससे सभी लोग देवों के संरक्षक, ब्रह्माजी के सबसे छोटे भाई विष्णु को दोष दे रहे थे। दूसरे बारहों आदित्यों में भार्गवों का प्रभुत्व बढ़ता जा रहा था।

इसी बीच महर्षि भृगु के श्वसुर दैत्यराज हिरण्यकश्यप ने हिमालय के उत्तर के राज्य पर चढ़ाई कर दिया। जिससे महर्षि भृगु के परिवार में विवाद होने लगा। महर्षि भृगु यह कह कर कि राज्य सीमा का विस्तार करना राजा का धर्म है, अपने श्वसुर का पक्ष ले रहे थे। इस विवाद में विष्णु जी ने उनकी पहली पत्नी, हिरण्यकश्यप की पुत्री दिव्या देवी को मार डाला। इस पारिवारिक झगड़े को आगे नहीं बढ़ने देने, उसे रोकने के लिए महर्षि भृगु के परदादा और विष्णु जी के दादा मरीचि मुनि ने इस निर्णय के साथ किया कि भृगु हिमालय जाकर रहे। उनके दिव्या देवी से उत्पन्न पुत्रों को सम्मान सहित पालन-पोषण की जिम्मेदारी देवगण उठायेंगे। परिवार की प्रतिष्ठा-मर्यादा की रक्षा के लिए भृगु जी को यह भी आदेश मिला कि वह श्रीहरि विष्णु की आलोचन नहीं करेंगे। इस प्रकार महर्षि भृगु सुषानगर से अपनी दूसरी पत्नी पौलमी को साथ लेकर अपने छोटे पुत्र ऋचीक के पास गाधिपुरी (वर्तमान गाजीपुर) आ गये।

**क्रमशः**

(गतांक से)

# मंगलाशासन आल्वार-पाशुरम्

*तमिल मूल - श्री टी.के.वी.एन.सुदर्शनाचार्या*

*हिन्दी अनुवाद - श्री के.रामनाथन*
*मोबाइल* - 9443322202

*सुट्टुम् ओळिवट्टम् सुळन्दु सोदी परन्देंगुम्*
*ऐत्तनै सेय्यिनुम् ऐन् मगन् मुगम् नेरोव्वाय्*
*वित्तगन् वेंगडवाणन् ऐन्मगन् उन्नै विळिक्किन्ऱ*
*कैत्तलम् नोवामे, अम्बुली कडिदु ओडिवा।। (56)*

**कठिन शब्दार्थ -** सोदी-प्रकाश, मगन-पुत्र, विळिक्किन्ऱ्-बुलाना, नोवु-दर्द, अम्बुली-चाँद, कडिदु-तुरंत, ओडिवा-दौड आओ।

**भावार्थ -** संत कवि पेरियाळवार भगवान विष्णु को अपने प्रिय पुत्र के बराबर मानते हैं। वे अपने पुत्र का मन बहलाने के लिए अनेक प्रकार का खेल दिखाते हैं। यहाँ तक कि वे चाँद को बुलाकर उसके साथ खेलवाना चाहते हैं। अपने मनोभाव को प्रकट करते हुए वे कहते हैं, ''हे चाँद! तुम अपनी चारों दिशाओं में प्रकाश फैलाकर सदा उसके बीच में रहते हो। इस प्रकार तुम ऐसे प्रकाश से अपने को सजाकर रखने पर भी मेरे प्यारे बेटे की सुन्दरता की बराबर कभी नहीं कर सकते। मेरा बेटा तो अद्भुत गुणों के साथ वेंकटगिरि पर रहता है। वह अपने हाथ से तुमको बुलाता है। उसके हाथ को दुःख न हो, इसलिए तुम तुरंत आ जाओ।''

मतलब यह है कि खेलने के लिए बच्चों के पास अनेक खिलौने होते हैं। बालक विष्णु अपने साथ खेलने के लिए चाँद को बुला रहा है।

*ऐन्निदु मायम् ऐन्नप्पन् अरिन्दिलन्*

*मुननैय वण्णमे कोण्डु अळवायेन्न*

*मननु नमुसियै वानिल् सुळट्रिय*

*मिननुमुयने अच्चोवच्चो वेंगडवाणने अच्चोवच्चो। (104)*

**कठिन शब्दार्थ -** मायम्-माया, अप्पन्-पिताजी, अरिन्दिलन्-अनभिज्ञ, अळवाय्-नापना, वानिल्-आकाश में, अच्चो-आलिंगन करना।

**भावार्थ -** भगवान विष्णु अपने प्यारे भक्तों पर बडी दया करने वाले हैं। यहाँ तक कि वे अपने भक्त को आलिंगन करके उसको सुख पहुँचाने वाले हैं। यह समझकर संत कवि पेरियाल्वार गाते हैं, ''जब विष्णु ने राजा महाबलि से दान पाकर त्रिविक्रम रूप में नापने को तैयार हुआ तब राजा के पुत्र नमुसी ने उसे रोकते हुए कहा, यह तो बडी माया है। मेरे पिताजी को तुम्हारी माया का पता नहीं है। याचना करते समय तुम जिस रूप में थे अब उसी रूप में रहकर तुमको नापना चाहिए। तब भगवान ने अपने पाँव से उसको आकाश तक ले जाकर गिराया। तुम तो उज्वलित मुकुट पहने हो। तुम मुझे आलिंगन कर लो। वेंकटगिरि पर रहने वाले भगवान तुम मुझे आलिंगन कर लो।''

मतलब यह है कि भगवान के आलिंगन में भक्त अपने दुःख से विमुक्त हो जाता है और उसे सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति हो जाती है।

*तेन्निलंगै मनन् सिरस्तोळ् तुणिसेय्दु*

*मिननिलंगु पूण् विभीडण नम्बिक्कु*

*ऐननिलंगु नामत् तळवुम् अरसेट्र*

*मिननलंगारर्कु ओर्कोल् कोण्डुवा*

*वेंगडवाणर्कु ओर्कोल् कोण्डुवा। (180)*

**कठिन शब्दार्थ -** इलंगै-लंका, मन्नन्-राजा, सिरम्-सिर, तोळ्-बाहें, अरसु-शासन, कोल-लकडी, कोण्डु वा-लाओ।

**भावार्थ -** संत कवि पेरियाळवार भगवान विष्णु को छोटा बालक मानकर उस पर अपना अपार प्रेम दिखाते हैं। वे कौवे को दिखाकर उसे बहलाते हैं। तब वे अपने प्यारे बालक को एक लकडी लाकर देने के लिए कौवे से निवेदन करते हैं। अपने ऐसे मनोभावों को प्रकट करते हुए गाते हैं, ''हे प्यारे कौवे! तुम भगवान कृष्ण को एक लकडी लाकर दो। जिसने ही लंका के राजा रावण के सिरों तथा बाहों को काट डाला और विभीषण को वहाँ का शासन देकर ऐसा आशीर्वाद दिया कि जब तक संसार में मेरा नाम है तक यह शासन करना। इतना ही नहीं तुम वेंकटगिरि पर रहने वाले भगवान विष्णु को भी एक लकडी लाकर दो।''

मतलब यह है कि भगवान विष्णु सभी जीवों के प्रति दया रखने वाले हैं। इसलिए वे कौवे से बालक विष्णु को खेलने के लिए लकडी लाने का निवेदन करते हैं।

**समाप्त**

# श्री चेन्नकेशवस्वामी जी का मंदिर
## ताल्लपाका

- डॉ.आई.एल.एन.चंद्रशेखर राव
मोबाइल - 7013185538

'ताल्लपाका' का नाम सुनते ही कलियुग के देवाधिदेव श्री वेंकटेश्वर स्वामी के परम भक्त और संकीर्तनाचार्य अन्नमय्या की याद आती है। श्री वेंकटेश्वर की स्तुति में हजारों संकीर्तन रचनेवाले अन्नमय्या का निजी गाँव या जन्म स्थान 'ताल्लपाका' गाँव है। इस परम भक्त का जन्मस्थल होने के कारण ताल्लपाका देशभर में प्रचलित हुआ है।

'ताल्लपाका' आ.प्र. राज्य के कडपा जिले के राजंपेटा शहर से लगभग आठ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। 'ताल्लपाका' शब्द की व्युत्पत्ति कुछ इस प्रकार है। पुराने जमाने में जब कागज का अन्वेषण नहीं हुआ था। कवि-पंडित लेखन के लिए ताडी के पत्तों का उपयोग करते थे। अन्नमय्या ने भी 32 हजार से अधिक अपने कीर्तनों को ताडी के पत्तों पर ही अंकित किया था। इन में अधिकांश आज भी उपलब्ध होते हैं। जिन्हें 'तालपत्र ग्रंथ' कहा जाता है। उन दिनों में यही नहीं ताडी के पत्तों से झोंपडियों का निर्माण होता था। तेलुगु में 'पाका' शब्द का अर्थ झोंपडी है। प्राचीन काल में इस क्षेत्र के लोग ताड़ी के पत्तों की झोपड़ियों में रहते थे। ताल्लपाका शब्द कालांतर में ताडी के पत्तों से बनाई गई झोंपडियों के अधिक होने से इस गाँव के नाम के रूप में परिणत हो गया।

श्री वेंकटेश्वर स्वामी साक्षात श्री महाविष्णु का अवतार है। उसी रूप में चेन्नकेशव स्वामी भी विष्णु का ही रूप है। श्री चेन्नकेशव स्वामी का एक दिव्य मंदिर अन्नमय्या के जन्मस्थल ताल्लपाका में स्थित है। श्री चेन्नकेशव स्वामी मंदिर, ताल्लपाका के प्राचीन मंदिरों में से एक है। एक स्थानीय किंवदंती के अनुसार ताल्लपाका श्री चेन्नकेशवस्वामी का मंदिर जनमेजय महाराजा द्वारा बनाया गया था। श्री चेन्नकेशवस्वामी की मूर्ति की प्रतिष्ठा भी उन्होंने ही की

थी। इस मंदिर के साथ-साथ इस क्षेत्र के अनेक वैष्णव मंदिर, शैव मंदिरों के निर्माण के पीछे जनमेजय का नाम जुडा है। जनमेजय के पिता परीक्षित महाराजा पांडवों के पोता और अभिमन्यु का पुत्र है। परीक्षित महाराज एक दिन शिकार करने गए। तब उन्होंने एक जानवर को देखा। उस का शिकार करने उस जानवर का पीछा-पीछा करते शमिक महामुनि के आश्रम में आ पहुँचे। राजा ने ऋषि से जानवर के बारे में पूछा। तपस्या में तल्लीन ऋषि ने उन्हें कोई जवाब दिया। इस से गुस्से परीक्षित महाराज ने एक मरे हुए साँप को महामुनि के गले में डाल दिया और चले गये। कुछ ही समय बाद, शमिक महामुनि का पुत्र आश्रम पहुँचा और उसने अपने पिता के गले में एक मरे हुए साँप को देखा। समझ लिया कि किसी ने अपने पिता के गले में मरे हुए साँप को डाल कर उन का अपमान किया। मुनि पुत्र गुस्से में आकर राजा को शाप दिया कि वह एक सर्प के डसने से ही मरेगा। थोड़ी देर के बाद शमिका महर्षि अपनी योग निद्रा से उठे और यह जानकर परेशान हो गए कि क्या हुआ था। वे असलियत को जान गए। महाराज ने शाप मुक्त करने की विनति भी की। किंतु कोई प्रयोजन नहीं हुआ। तब परीक्षित राजा ने सांप की डस से बचने के लिए एक ही खंभे का बहुत बड़ा भवन बनवाया और उसमें रहने लगे। अंत में एक दिन साँप अपना रूप बदल कर भवन में प्रवेश करके महाराज को डसने से महाराज की मृत्यु हो गई। जनमेजय अपने पिता के हत्यारे सर्प जाति को मिटाने की शपथ ली। सर्प जाति को मिटाने के लिए सर्प याग शुरू किया। माना जाता है कि फिर जनमेजय ने सर्प याग के पाप से

छुटाकारा पाने के लिए देवताओं की पूजा करने के लिए 108 शिव मंदिरों और 108 वैष्णव मंदिरों का निर्माण किया था। उन मंदिरों में ताल्लपाका में स्थित श्री चेन्नकेशव मंदिर भी एक है।

मान्यता है कि श्री चेन्नकेशवस्वामी की पूजा ताल्लपाका अन्नमाचार्यों के पूर्वजों ने भी की थी। अन्नमय्या के इतिहास से पता चलता है कि अन्नमय्या के दादाजी नारायणय्या जी को स्वामीजी ने स्वयं शिक्षित किया और विद्वान बनाया। स्थानीय किंवदंती से यह भी पता चलता है कि इस स्वामीजी ने ताल्लपाका अन्नमाचार्यजी के जीभ पर बीजाक्षर लिखकर पदकविता पितामह बनने में अन्नमाचार्यजी का साथ दिया।

स्थानिकों के अनुसार जिस घर में अन्नमाचार्यजी निवास किया करते थे उस घर के बगल में ही श्री चेन्नकेशव स्वामीजी का मंदिर है। चेन्नकेशव स्वामी के मंदिर के रास्ते में ही श्री सुदर्शन चक्रत्ताल्वार का मंदिर स्थित है। सुदर्शन चक्र मंदिर के गर्भगृह में एक काले पत्थर की पटिया पर उकेरा गया है। सुदर्शन चक्र के निचले भाग में छोटे कृष्ण लटके हुए है। मतलब श्री सुदर्शन चक्र के शीर्ष पर, सबसे नीचे, श्री बालकृष्ण मूलविराट के रूप में पूजा पा रहे हैं। यहाँ स्वामीजी श्री सुदर्शन चक्रत्ताल्वार और श्री संतान वेणुगोपालस्वामी के नाम से विद्यमान है।

श्री चेन्नकेशवस्वामी का मंदिर पूरब अभिमुख के एक विशाल प्रांगण में स्थित है। मुख्य मंदिर के सामने ध्वजस्तंभ, वेदी और गरुड मंडप हैं। प्रधान आलय का मुख मंडप में अंतरालय और गर्भालय है, प्रधान गर्भगृह में श्री चेन्नकेशव स्वामीजी दिव्य आभूषणों से विराजमान होकर भक्तजनों को अपने करुणा-कटाक्षों से पुनीत कर दर्शन दे रहे है। स्वामीजी चतुर्भुजी है। स्वामी अपने हाथों में शंख, चक्र, गदा के साथ अभय मुद्रा में हैं। अंतरालय में श्रीदेवी-भूदेवी के साथ श्री चेन्नकेशवस्वामी अपनी उत्सवमूर्तियों के साथ-साथ श्री चक्रत्ताल्वार के दर्शन भी कर सकते हैं। आलय प्रांगण के ईशान्य में स्थित उपालय में श्री आंजनेयस्वामी विराजमान हैं। भक्तों का मानना है कि इस स्वामीजी की पूजा करने से उन्हें ग्रह दोषों से छुटकारा मिलेगा और सभी प्रकार की विजय प्राप्त होती है।

ऐतिहासिक दृष्टि से इस मंदिर का निर्माण 11वीं शताब्दी के आस-पास हुआ था। यह ताल्लपाका अन्नमाचार्य जी के दादाजी के समय का एक आलय है। ऐसा लगता है कि तब से इस क्षेत्र पर शासन करने वाले सभी शासकों ने स्वामीजी की सेवा करके अपने को धन्य बनाया है। वर्तमान में यह मंदिर तिरुमल तिरुपति देवस्थान के आधीन है।

ताल्लपाका श्री चेन्नकेशव स्वामीजी के मंदिर में नित्य पूजा-अर्चना के साथ-साथ प्रति वर्ष ब्रह्मोत्सव भी मनाये जाते हैं। वे आषाढ शुद्ध एकादशी से लेकर बहुल चविति तक नौ दिनों तक ब्रह्मोत्सव धूम-दाम से मनाते हैं। विभिन्न वाहन सेवाओं के साथ-साथ छठें दिन शाम को कल्याणोत्सव और सातवें दिन रथोत्सव भी मनाया जाता है। धनुर्मास, मुक्कोटि एकादशी और विभिन्न विशेष त्योहारों के अवसर पर विशेष पूजाएँ की जाती हैं।

भगवान श्री वेंकटेश्वर के परम भक्त ताल्लपाका अन्नमय्या के द्वारा अर्चित-पूजित देव श्री चेन्नकेशव स्वामी के दर्शन करके भक्त-गण आध्यात्मिक आनंद प्राप्त करते हैं। अन्नमय्या के लिए दोनों एक ही हैं। श्रीमन्नारायण के रूप धारी दोनों अन्नमय्या के इष्ट देव हैं।

(गतांक से)

# श्री प्रपन्नामृतम्

## (35वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

मोबाइल - 9900926773

### पांचरात्रागम अर्चनापद्धति

भगवती सरस्वती के द्वारा सम्मानित यतिराज श्री रामानुजाचार्य शारदापीठ से प्रस्थान कर परम पवित्र काशीपुरी में आये। यहाँ पर गंगा स्नान कर अविनाशी शेषशायी भगवान श्रीहरि को प्रणाम किया और यहाँ निवास करने वाले सभी विद्वानों को शास्त्रार्थ में जीतकर उन सभी विद्वानों के द्वारा पूजित, वन्दित होकर यहाँ से आप श्रीजगन्नाथपुरी पधारे। वहाँ मायावादी विद्वानों को शास्त्रार्थ में पराजित कर ''रामानुज मठ'' की स्थापना कर भगवद् आराधन करते हुए कुछ समय व्यतीत किया। एक दिन आपने श्रीजगन्नाथ भगवान का कैंकर्य करने वाले सभी पुजारियों को बुलाकर कहा कि- ''जिस प्रकार वर्तमान में आगम ग्रन्थ श्रीनारद पांचरात्र में बताई हुई पद्धति से श्रीरंगम आदि क्षेत्रों में भगवान की पूजा, अर्चना, उत्सव, भोग आदि सभी कार्य हो रहे हैं, उसी के अनुसार यहाँ पर भी श्रीजगन्नाथ भगवान की आराधना होनी चाहिये। यह आराधना का क्रम भगवान श्रीहरि को परमप्रिय, अक्षय फल प्रदाता और मोक्ष को देने वाला है। अतः आप लोग भी भगवान का पूजन इसी पद्धति से कीजिये। इससे कोई क्षति नहीं, बल्कि पूर्ण कल्याण ही होगा।''

श्रीजगन्नाथ भगवान के पुजारियों ने यतिराज की वाणी को सुनकर उसको अस्वीकार कर, उठकर चले गये। पुजारियों के मत को जानकर श्री यतिराज ने झटिति-पाँचरात्रागम के अनुसार पूजन आदि का कार्य जानने वाले पुजारियों को एकत्र करके उनके द्वारा, जिस प्रकार श्रीरंगम आदि दिव्य-देशों में भगवान की पूजा अर्चना होती है, वैसी ही यहाँ भी कराने का विचार कर स्थानीय राजा को अपने अधीन कर लिया। यह बात जानकर सभी पुजारियों ने भगवान जगन्नाथ के सम्मुख आकर श्री रामानुजाचार्य के अभिप्राय को निवेदन करते हुये प्रार्थना की कि- ''भगवन्! अब हम दासों की रक्षा कीजिये? हम लोगों ने परम्परा से चली आने वाली सभी पूजा विधियों से आपको सम्पूजित किया और आपने सभी अभीष्ट फलों को मुक्त हस्त से दिया है। आज यदि आप हमारी पूजा पद्धति को स्वीकार न करके आये हुये यतिराज श्री रामानुजाचार्य

की पूजा पद्धति को स्वीकार करेंगे, तो हम निःसन्देह आपके समक्ष ही प्राणों का विसर्जन कर देंगे।'' इतना कहकर वे पुजारी पत्थरों से अपना सिर फोड़ने लगे। भगवन्निष्ट पुजारियों की श्रद्धा को देखकर विगलित हुये कृपासागर भगवान ने प्रसन्नतापूर्वक उन्हें अभयदान दे दिया। सभी पुजारी अभयदान पाकर प्रसन्न मन से अपने घर चले गयें।

इसके बाद यतिराज श्री रामानुजाचार्य भगवान जगन्नाथ के समीप आये और प्रार्थना करते हुये बोले- ''हे संसार व्यापी जगदीश! आप संसार के लिये पूजनीय हैं, स्तुत्य हैं। पृथ्वी पर जितने भी श्रीरंग आदि स्थल हैं, वे सब नारदपांचरात्रागम विधि के अनुसार पूजित हैं। उसी पूजाविधि और उत्सवादि कार्यों की विधि को आप भी अंगीकार करें।'' भगवान पुरुषोत्तम भाष्यकार के वचनों को स्वीकार कर प्रत्युत्तर में बोले- ''हे यतिराज! हे मन्नाथ! हे जगद्गुरु! इस समय जितने भी भूतल पर श्रीरंगादि दिव्यदेश स्थल हैं, वे सब मैं आपके आधीन कर चुका हूँ। किन्तु आप इस क्षेत्र को तो मेरे आधीन ही रहने दीजिये, जिससे कि मैं इच्छानुसार इन सब लोगों के साथ सुख पूर्वक रह सकूँ।'' श्री यतिराज ने पुनः-पुनः प्रार्थना की, तो भगवान ने कहा- ''जैसा मैंने पूर्व में बतलाया था उसी ढंग से पूजा होनी चाहिये। आपके विज्ञापनानुसार यहाँ पूजनोत्सव नहीं हो सकता।'' इसके बाद दृढ़ निश्चयी रामानुज ने पूजनोत्सव की विधि को बदलकर अपने मतानुसार करने का दृढ़ निश्चय करके भगवान को प्रणाम कर शीघ्रता से मठ में आये और मित्र, राजा, प्रजा आदि की सहायता से जगन्नाथ मंदिर को श्रीरंगादि स्थलों की भाँति बनाने की इच्छा करते हुए शयन कक्ष में जाकर सो गये।

।। श्रीप्रपन्नामृत का ३५वाँ अध्याय पूर्ण हुआ।।

क्रमशः

नीति पद्यम्

## आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चुनी हुई रचनायें)

### मूर्ख-पद्धति

माटलाड गलुगु मर्मंबु लेरिगिन
पिन्न पेद्द तनमु लेन्न वलदु।
पिन्न चेति दिव्वे पेद्दगा वेलुगद्रा
विश्वदाभिरामा विनुरवेमा ।।१२।।

मूर्ख लोग मनुष्यों की बड़ाई और छुटाई का निर्णय उम्र के आधार पर किया करते हैं। किन्तु यह ठीक नहीं है। बडप्पन का फैसला वचन-विदग्धता एवं विवेक-बल की कसौटी पर कस कर ही किया जाना चाहिए। भला कहीं छोटे बच्चे के हाथ की दीपिका अधिक ज्योति नहीं देती है?

## सितंबर २०२२

०१ ऋषिपंचमी
०७ श्री वामन जयंती
०७-१० तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का पवित्रोत्सव
०९ श्री अनंतपद्मनाभव्रत
२६ देवी नवरात्रि उत्सव आरंभ
२६ से अक्तूबर ०५ तक तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का नवरात्रि उत्सव
२७ से अक्तूबर ०५ तक तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

आयुर्वेद

# गाय का दूध

- डॉ.सुमा जोषि,
मोबाइल - 9449515046.

आयुर्वेद में गाय के उत्पन्नों का प्रयोग किया जाता है। उन सब में गाय का दूध सबसे पहले आता है। गाय के दूध का उपयोगिता बहुत है। सामान्यतः माँ का दूध ही श्रेष्ठ होता है, जो जन्म के समय से ही शरीर का पोषण करता है। भारतीय मूल की नस्ल की गाय के दूध में लगभग माँ के दूध के समान गुण होते हैं। यदि उसके अनुसार प्रयोग किया जाए तो यह अमृत के समान कार्य कर सकता है।

**दूध के गुण :** दूध का स्वाद मीठा होता है। यह ओजस को बढ़ाता है, जिसे सभी धातुओं का सार माना जाता है। तो यह सात धातुओं का भी पोषण करता है। दूध वात और पित्त को कम करता है लेकिन कफ को बढाता है। दूध एक अच्छा वृष्य (कामोद्दीपक) है, जिसका अर्थ है कि यह शुक्र धातु (प्रजनन ऊतक) को मजबूत करता है। दूध कफ को बढ़ाता है, और पचने में भारी होता है। इसीलिए, ठण्डे दूध का सेवन नहीं करना चाहिए क्योंकि यह भारी होता है।

दूध हमेशा गर्म और उबालने के बाद ही लेना चाहिए। दूध शीतवीर्य का होता है। जिसका अर्थ है कि यह शरीर पर शीतलन प्रभाव डालता है। गाय का दूध कायाकल्प (रसायन) है। यह विभिन्न ऊतकों को मजबूत करता है। स्मृति में सुधार करता है और प्रतिरक्षा को बढ़ाता है। यह आसानी से पच जाता है और शरीर में अवशोषित हो जाता है। Organic जैविक दूध का मतलब है कि गायें घास और अनाज दोनों का मिश्रण खासकती हैं। उनका भोजन पूरी तरह से जैविक होना चाहिए। इसका मतलब है कि कोई एंटीबायोटिक्स, हार्मोन, सिंथेटिक कीटनाशक, शाकनाशी या अनुवंशीक रूप से संशोधित सामग्री नहीं है। अमेरिका में गैर जैविक गायों का विकास हार्मोन और एंटीबायोटिक दवाओं के साथ इलाज किया जा सकता है, हालांकि यह कई अन्य देशों में अर्वेध है।

**गाय के दूध का उपयोग :** गाय के दूध को पंचामृत और पंचगव्य में उपयोग किया जाता है। सोते समय एक कप गर्म गाय का दूध पीना नीन्द, जीवन शक्ति, प्रतिरसा और सामान्य फिटनेस के लिए अच्छा है। दूध को बादाम, दालचीनी, इलायची, केसर आदि के साथ उबालना स्वास्थ्यवर्धक है। गाय के दूध में गुड और गाय का घी मिलाकर पीने से पेशाब की समस्या दूर होती है, वायरल बुखार कम होता है और तनाव पर नियंत्रण होता है। गाय के दूध में सोंठी का लेप बनाकर पुराने सिर दर्द में लगाएँ। हिचकी आने पर दूध के साथ सोंठी उबालकर हल्का गर्म दूध पिलाएँ।

Goldenmilk / सुनहरा दूध - जिसे हल्दी दूध के रूप में भी जाना जाता है। एक पारंपरिक भारतीय पेय है। यह स्वस्थ, चमकीला पीला पेय पारंपरिक रूप से गाय के दूध को हल्दी और अन्य मसालों जैसे दालचीनी और अदकर के साथ गर्म करके बनाया जाता है। इसके बहुत सारे फायदे हैं। जैसे -बीमारियों और संक्रमणों से लडने में सम्पूर्ण योगदान देता है। सूजन और जोडों के दर्द को कम कर

सकते हैं। इसमें ऐसे गुण हैं जो मधुमेह और हृदय रोग के जोखिम को कम कर सकते हैं और हृदय क्रिया को लाभ पहुँचा सकते हैं।

अध्ययनों से संकेत मिलता है कि हल्दी कैंसर से कुछ सुरक्षा प्रदान कर सकती है। गोल्डन मिल्क में कुछ तत्व याददाश्त को बनाए रखने और अल्जाइमर और पार्किंसंस रोग में मस्तिष्क के कार्य में गिरावट को कम करने में मदद कर सकते हैं। मूड और अवसाद में सुधार करने में मदद करता है।

**ब्रोकियल कंजेशन :** $^1/_2$ छोटा चम्मच पीसी हुई पिप्पली, एक कप दूध, एक कप पानी, एक कप दूध बचनेतक पका लें और सेवन करें। गले में खराश, खांसी हो तो, $^1/_2$ छोटा चम्मच पीसी हुई हल्दी, एक कप दूध, एक कप पानी डालकर एक कप बचने तक पकायें और सेवन करें। अगर सूखी खांसी हो, तो $^1/_2$ छोटा चम्मच पीसी हुई अदरक को ऊपर बताई हुई विधी के अनुसार दूध में डालकर उबालकर पिये। अति आम्लता हो तो एक कप गर्म दूध में एक चम्मच इलायची मिलाकर सेवन करें। अजीर्ण हो, तो $^1/_2$ छोटा चम्मच पीसी हुई अदरक एक कप दूध, एक कप पानी में डालाकर पकाएँ। एक कप बच जाये तो सेवन करें। हल्दीवाला दूध - फ्रैक्चर, चोट, ऑस्टियोपोरोसिस में सहायक है।

**पुरानी थकान, कम कामेच्छा :** छोटा चम्मच पीसी हुई इलायची, छोटा चम्मच पीसे हुए बादाम, एक कप दूध, $^1/_4$ कप पानी, एक कप तरल होने तक पकायें। अच्छी याददाश्त और कामेच्छा के लिए एक कप दूध में इलायची को डालकर पकायें। ठण्डा होने पर शहद डालकर सेवन करें। दूध में दो चुटकी जायफल मिलाएँ; एक मिनट के लिए उबाल लें और पी लें। यह अनिद्रा के लिए उपयुक्त है।

**यौन दुर्बलता :** सोते समय एक कप गर्म दूध में एक चुटकी केसर (यदि आप केसर को थोडे से गर्म पानी में कम से कम 20 मिनट के लिए भिगो दें और दूध में केसर और उसका पानी मिला दें तो सबसे अच्छा काम करता है)।

**कम ओजस, यौन दुर्बलता :** 4 से 5 बादाम घी में भून लें। एक चुटकी केसर और एक कप गर्म दूध डालें और चिकना होने तक मिलाएँ। सोते समय पियें।

**शुक्राणुजनन के लिए :** एक चम्मच अश्वगन्ध एक कप दूध के साथ सुबह और शाम को लें।

**खराब याददाश्त हल्दी संज्ञानात्मक हानि :** केसर ब्राह्मी दूध एक चुटकी केसर को थोडे से गर्म पानी में कम से कम 20 मिनट के लिए भिगो दें। इस बीच एक कप दूध में उबाल आने दें और एक चम्मच ब्राह्मी डालें। 10 मिनट तक खडी रहने दें और छान लें। अब दूध में केसर और उसका भीगा हुआ पानी डाल दें। इस तैयारी को सोते समय पियें। जलन में, तुरन्त ठण्डे दूध प्रभावित हिस्से पर डालें या प्रभावित हिस्से को ठण्डे दूध में भिगो दें। आँखे अगर जलन पैदा करनेवाले पदार्थ के सम्पर्क में आने पर तुरन्त ठण्डे दूध से सिंचाई करें।

**मुंहासे :** जायफल, दूध और शहद से फेस मास्क बनाएँ और लगाएँ। सुन्दरता/सौन्दर्य वृद्धि के लिए दूध को कई प्रकार के चेहरे के मास्क और इसी तरह के उपचारों में किया जाता है।

**सावधानियाँ :** दूध के प्रयोग के समय हमें कुछ बातों का मन्थन करना आवश्यक है। क्योंकि मनुष्य ही एकमात्र ऐसी प्रजाति है जो किसी अन्य प्रजाति का दूध पीती है, वह जो बछडे के लिए पैदा होता है। गाय का दूध पीना हमारे लिए प्राकृतिक से बहुत दूर है। गाय के दूध में उच्च स्तर के पोषक तत्व होते हैं। बच्चों को इतना प्रोटीन पचाना कठिन होता है। इसीलिए अधिक मात्रा में गाय का दूध ना दें। जो कफ प्रकृति के हैं, मधुमेह के रोगी हैं, उनमें भी कम मात्रा में दें। आजकल दूध की अधिक उत्पादन के लिए हार्मोन दिये जाते हैं। इसका भी दुष्प्रभाव पडता है। अधिक मात्रा में इसका प्रयोग मलबद्धता नहीं तो दस्त का कारण बन सकती है। ध्यानपूर्वक दूध का प्रयोग करें। स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें।

# आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य
आयोजक - महामहोपाध्याय समुद्राल लक्ष्मण्या
हिन्दी में निर्वहण - डॉ.सी.आदिलक्ष्मी
मोबाइल - 9949872149

## अष्टादशः पाठः - अठारह पाठ

तव = तुम्हारा | पुनः = फिर, दुबारा | मम = मेरा (मेरे)
बहिः = बाहर | तत् = वह | अन्तः = अंदर
करिष्यति = कर सकते हैं | करिष्यसि = करते हैं (आप) | करिष्यामि= मैं कर सकती हूँ।

**प्रश्न : (अ)**

1. तव जनकः अद्य किं करोति?
2. मम जनकः गृहे नास्ति।
3. श्वः पाकं कः करिष्यति?
4. मम अनुजः करिष्यति।
5. तत्-गृहं मम।
6. त्वं झटिति स्नानं करिष्यसि किम्?
7. युष्मद्गृहं अन्तरस्ति।
8. अस्मद्गृहं बहिरस्ति।
9. सः पुनः स्नानं करिष्यति किल।
10. अहमपि करिष्यामि शाकं पाकमपि।

**जवाब : (अ)**

1. तुम्हारे पिताजी अब क्या कर रहे हैं?
2. मेरे पिताजी घर पर नहीं है।
3. कल कौन पकाएगा?
4. मेरा छोटा भाई पकाएगा।
5. वह मेरा घर है।
6. क्या आप जल्दी स्नान करेंगे?
7. आपका घर थोडा-सा अंदर को है।
8. हमारा घर बाहर ही हैं।
9. वह फिर स्नान करेगा न!
10. मैं सब्जी बना सकती हूँ।

**प्रश्न : (आ)**

1. तुम्हारा घर कहा है?
2. मेरा घर पहले से ही वही था।
3. अभी यहाँ है।
4. वे खाना कब पका सकते हैं?
5. तुम कल मेरे लिए एक पलंग बनाओ।
6. अब तुमने फिर स्नान क्यों किया?
7. वहाँ सब्जी बन रही है; देरी मत करो।
8. क्या अब आप नही पकाएँगे?
9. हमारे घर में पानी नहीं है इसलिए तालाब में स्नान कीजिए।
10. आपके बच्चे घर में हैं या नहीं।

**जवाब : (आ)**

1. युष्मद्गृहं कुत्रासीत्?
2. मम गृहं पूर्वमपि तत्रैवासीत्।
3. अधुना अत्र अस्ति।
4. ते पाकं कदा करिष्यन्ति?
5. त्वं श्वः मह्यं एकं मञ्चं कुरु।
6. अधुना त्वं पुनः कुतः स्नानं अकरोः?
7. पाकं तत्र कुर्वन्ति; विलम्बं मा कुर्यात्।
8. त्वं इदानीं पाकं न करोषि किम्?
9. अस्मद्गृहे जलं नास्तीत्यतः तटाके स्नानं कुरु।
10. युष्माकं बालकाः गृहे सन्ति, उत न।

# अगस्त महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र
मोबाइल - 9989376625

**मेष -** नवीन योजनाओं की शुरुआत, धन संचय का मार्ग प्रशस्त होगा, दुष्प्रवृत्तियों से राहत। मित्रजनों का सहयोग, विद्या-बुद्धि का विकास, प्रतियोगी क्षेत्र में सफलता, सन्तान सुख, व्यापारिक अनुकूलता रहेगी। उत्तरार्ध में भाग्य वृद्धि होगी।

**वृष -** कार्य क्षेत्र की विघ्न बाधाओं का निवारण, आरोग्य सुख, नौकरी-व्यवसाय की स्थिति सामान्य रहेगी। आर्थिक सन्तुलन, पारिवारिक सहयोग, दाम्पत्य जीवन में अस्थिरता रहेगी। यात्रा में कष्ट, अनियमित दिनचर्या, सहयोगियों से अनुकूलता बनाये रखें। भाग्य अनुकूल रहेगा।

**मिथुन -** नित्यकर्म में व्यवधान, कारोबार में अल्पलाभ, श्रमानुकूलता-सफलता नहीं मिलेगी। धनसंग्रह में कमी होगी। राजनीतिक परेशानियों में वृद्धि, माता को कष्ट, पारिवारिक दायित्व निर्वहन में परेशानी होगी। यात्रा का योग है। स्त्री-सन्तान का सुख सामान्य रहेगा।

**कर्कट -** इस मास में रोग-शोक-संताप की प्राप्ति, उदर विकार, पेट दर्द। व्यावहारिक जीवन में संयम जरूरी। कार्यों में श्रमपूर्ण सफलता, सन्तान पक्ष से सुखद अनुभूति। वेतन भोगी कर्मचारियों को लाभ होगा। बौद्धिक विकास, उद्यमशीलता बढाने से लाभ।

**सिंह -** स्थिर लक्ष्मी एवं विशिष्टजनों का सहयोग मिलेगा। स्वास्थ्य-उत्तम, वाणी व्यवहार में नियंत्रित कर समस्याओं का समाधान पा सकेंगे। रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे, पारिवारिक सहयोग मिलेगा। आत्मविश्वास की वृद्धि, नौकरी में उल्लास, अध्ययन में रुचि बढेगी, स्त्री सुख प्राप्त होंगे।

**कन्या -** रोग मुक्ति, आरोग्य सुख। उद्योग-धन्धे के विकास में आवश्यक पूंजी की व्यवस्था होगी। भूमिलाभ, पद-प्रतिष्ठा की वृद्धि, मातृसुख, मकान-गृह लाभ, नौकरी में पदोन्नति होगी, सुखी दाम्पत्य जीवन। विशिष्टजनों का सहयोग-समर्थन, विद्या-बुद्धि का विकास होगा।

**तुला -** मास-फल मध्यम है। नौकरी-व्यवसाय की स्थिति सामान्य रहेगी। विचारों में उग्रता, घर-परिवार की चिन्ता, महत्त्वाकांक्षा मन्द पड़ेगी। दाम्पत्य जीवन में कष्ट, संतान एवं स्त्री पक्ष से मनमुटाव रहेगा। मानसिक कष्ट, पारिवारिक दायित्व की वृद्धि। दैवाराधन से परेशानियाँ कम होगी।

**वृश्चिक -** सकारात्मक परिवर्तन, लाभ के अनेकानेक अवसर मिलेंगे। गृहस्थ जीवन सुखी, विरोधी पराजित होंगे, व्यवसायिक वर्ग के लिए मास शुभ होगा। सामाजिक विकास, व्यावसायिक बाधाओं का शमन, छात्रों को सफलता मिलेगी।

**धनु -** मिला-जुला प्रभाव दिखेगा, आगन्तुकों से कष्ट, उत्तरदायित्व की वृद्धि, नवीन काम धन्धे की योजना क्रियान्विति में बाधक स्थिति रहेगी। शत्रुओं से कष्ट, अपनी वाणी पर नियंत्रित रहे नहीं तो अनावश्यक वाद-विवाद सम्भव है।

**मकर -** वाद-विवाद, व्यथा, चिढ़-चिन्ता, कफ ज्वरादि से कष्ट, शारीरिक दुर्बलता और आन्तरिक अशान्ति रहेगी। अपने अधिकारियों से मतभेद होगा, पदमुक्ति का भय बना रहेगा। सामाजिक कार्यों में गतिरोध, निरर्थक भाग-दौड़ से परेशानी होगी।

**कुम्भ -** मानसिक व्यथा, पारिवारिक दायित्व की वृद्धि, संतान पक्ष की चिन्ता, पठन-पाठन में अरुचि, व्यय की अधिकता रहेगी। वाहन ध्यान से चलाए, आकस्मिक दुर्घटना, पैर अथवा सिर में चोट लगने की सम्भावना है। शारीरिक पीड़ा।

**मीन -** इस मास में जीवन व्यवस्थित रहेगी। पारिवारिक विरोध का समाधान होगा, अन्य माध्यम से धनागम होगा। व्यावसायिक यात्राएँ सफल और सुफल होंगी। मान-यश कीर्ति का विस्तार होगा। अधिकार क्षेत्र का विकास होगा। धार्मिक रुचि, आध्यात्मिक प्रभाव बढ़ेगा।

नीतिकथा

# आशीर्वाद का प्रभाव

- श्रीमती के प्रेमा रामनाथन, मोबाइल - 9443322202

तपस्वी साधुओं तथा बडों के आशीर्वाद में विशेष महत्व होता है। इसलिए हिंदु धर्म में यह प्रथा आज भी जारी है कि जब हम साधु संतों का दर्शन करते हैं या बडों से मिलते हैं तब उनके चरण छूकर नमस्कार करते हैं और वे बडे दिल से हमें आशीर्वाद देते हैं। हिंदु धर्म की यह रीति हमारी संस्कृति में एक अंग सा लंबे समय से चलती आ रही है।

एक बार राजा धर्मसेन अपने कुछ वीरों के साथ जंगल में शिकार करने निकल पडा। तब वह अपने साथ पक्षी-जानवर की भाषा जानने वाले एक आदमी को भी साथ लेकर चला। वे सब जंगल के बीच में आ गए। लेकिन उनको कोई जानवर दीख नहीं पडा। इसलिए राजा आराम करने के विचार से एक पेड की छाया में लेट गया और उसके साथ आये वीर उसकी रक्षा में आस-पास खडे हो गये। तब यकायक उस पेड से एक पक्षी अपने दोनों पंखों को फडफडाते हुए जोर की आवाज में चिल्लाने लगी। यह दृश्य देखकर राजा चौंक उठा। उसने इसका विवरण जानने के लिए अपने सैनिक द्वारा पक्षी की भाषा जानने वाले आदमी को बुलवाया।

वह आदमी बडी नम्रता से आकर राजा के सामने खडे हो गया। राजा ने उसे देखकर पूछा, ''क्या तुमने थोडे समय के पहले पेड पर बैठी उस पक्षी के व्यवहार को देखा? मुझे बताओ कि वह पक्षी क्या कह रही है?'' यह सुनकर उस आदमी ने कहा, ''महाराज! उस पक्षी ने हमारे संबन्ध में कुछ नहीं कहा। उसने यही कहा कि थोडे समय बाद एक किसान घास काटने के लिए इस ओर आयेगा। वह अपना काम करते समय साँप से डँसकर मारा जायेगा।'' उस समय राजा ने देखा कि एक किसान घास काटने के लिए उस दिशा में आ रहा है। राजा ने सोचा कि पक्षी के कथन के अनुसार एक किसान आ रहा है। उसके कथन में आधा सच हो गया। अब बाकी क्या होगा? ऐसा सोचकर वह अपने वीरों के साथ उस पेड के पीछे छिपकर देखने लगा।

शाम का समय आ गया। लेकिन आश्चर्य क्या है वह किसान घास काटकर सही सलामत वापस आ रहा है। यह देखकर राजा के मन में यह संदेह उठा कि पक्षी की भाषा जानने वाले उस आदमी ने कहीं झूठ बोल दिया हो, इसलिए उसने उस आदमी बुलवाकर बडे व्यंग्य से पूछा, ''क्या उस साँप ने इस किसान को डँसना भूल गया? या इसने यमराज को धोखा दे दिया? तुम्हारे वास्ते मेरा एक दिन बेकार हो गया। मुझे जवाब दो कि इसने मृत्यु से कैसे बचा? ठीक जवाब न देने पर तुम अपनी मृत्यु से नहीं बच सकते और तुमको कोई भी बचा नहीं सकता।'' राजा की ऐसी बात पर उस आदमी के मन में डर पैदा हो गया। असल में उसको पता नहीं था कि वह किसान अपनी मृत्यु से कैसे बच पाया। इसलिए उसने राजा को देखकर नम्रता से कहा, ''महाराज! पक्षी की भाषा कभी झूठ नहीं होती। इस किसान के प्राण बचने के पीछे कोई कारण हो सकता है। उससे पूछ-ताछ करने पर सच्चाई मालूम हो जायेगी।''

अपने सिर पर काटे गये घास से बने गट्टर के साथ आ रहे उस किसान को रोककर उस आदमी से कहा। ''घास के गट्टर को नीचे डालो। उसकी बात मानकर वह किसान भी घास के गट्टर को जोर से जमीन पर पटक दिया। गट्टर के गिरते ही उस पर बांधी गयी रस्सी खुल गयी और घास सब बिखर गये। तब उसके अन्दर देखने पर मालूम हुआ कि एक साँप दो टुकडे हो कर मरा पडा है।'' यह देखकर सब को बडा आश्चर्य हुआ। तब उस आदमी ने राजा को समझाया... ''महाराज! यह साँप ने किसान को काटने के लिए आया होगा। पता नहीं यह कैसे कटकर मर गया।'' तब राजा ने उस किसान को देखकर पूछा, ''क्या तुमने जंगल में कोई चमत्कार पूर्ण घटना को देखा?''

तब किसान ने कहा, ''महाराज! मैंने ऐसा कुछ नहीं देखा। लेकिन घास काटने जाते समय एक तपस्वी को देखा। उनकी सूरत अपनी तपस्या के बल से चमक रही थी। उनको देखते ही मैंने उनके चरण में गिरकर नमस्कार किया। तब उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया कि लंबे समय तक जियो।'' किसान की बात सुनकर उस आदमी ने राजा को समझाया, ''महाराज! इसमें संदेह नहीं है कि उस महान तपस्वी के आशीर्वाद ने ही इस किसान के प्राण को बचा दिया है। यह तो सत्य है कि महान लोगों के कथन और आशीर्वाद में विधि की विडंबना को भी बदलने की महान शक्ति होती है।'' उसकी बात से राजा को मालूम हो गया कि बडों के आशीर्वाद प्रभावशाली होते हैं। उसके बाद उसने सबको इनाम देकर अपनी प्रसन्नता को प्रकट किया।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान,
तिरुपति।

## प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 10-15 वर्षों की आयु के बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र का जिराक्स प्रति मान्य नहीं है। 'ओरिजनल' रूप में ही मूल पृष्ठ मात्र ही भेजना चाहिए।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र पहुँचाने की अंतिम तिथि 25-08-2022 है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम सितंबर-2022 मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।

**प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-**
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश.

बच्चे का नाम..........................................
आयु..........., चंदा नंबर.............................
पता.....................................................
.........................................................
मोबाइल नं...........................................

# क्विज

1) धन की देवी के रूप में किसकी पूजा की जाती है?
ज)........................................................
2) 'गरुड पंचमी' किस दिन मनायी जाती है?
ज)........................................................
3) साम्राट पुरु को किसने राखी बाँधी थी?
ज)........................................................
4) भगवान श्रीकृष्ण के सहोदर बलराम जी की माताजी का नाम क्या है? ज).........................................
5) विघ्नों का हरण करके शुभ पहुँचानेवाला त्यौहार कौन सा है?
ज)........................................................
6) देवकी-वसुदेवों की कितनी वीं संतान के रूप में श्रीकृष्ण का जन्म हुआ? ज).....................................
7) श्री लक्ष्मी हयग्रीव स्वामी के रूप में कौन से भगवान अवतरित हुए? ज) ......................................
8) ब्रह्मोत्सव के अवसर पर अंतिम दिन सुबह कौन सी सेवा की जाती है? ज) .......................................
9) सूत मुनि ने कौन-सी जगह पर शौनकादि मुनियों को पुराण वाचन सुनाया था? ज)..........................
10) सुकन्या के पिताजी का नाम क्या था?
ज)........................................................
11) ऋषि च्यवन के साथ कौन से देव नदी में डूबकर, बाहर आते हैं? ज)...........................................
12) भगवान श्रीकृष्ण के सहोदर बलराम का प्रधान आयुध कौन सा है? ज).......................................
13) गणाध्यक्ष देवता कौन हैं?
ज)........................................................
14) गणेश चतुर्थी के दिन किस देवता को नहीं देखना चाहिए? ज)............................................
15) ब्रह्म देव की पत्नी का नाम क्या है?
ज) ....................................................

चित्रकथा

# चौथी का चाँद देखने से...

तेलुगु में - डॉ.के.रविचंद्रन्
हिन्दी में - डॉ.एम.रजनी
चित्र - श्री टी.शिवाजी

श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी के साथ रासक्रीडा खेलते हुए अनजाने में चौथी के चाँद को देखा।

रुक्मिणी! आज चौथी है न! मैंने चाँद को देखा। कौन सी मुशीबत सिर पर आ पडेगी पता नहीं।

आप जैसे लोगों को भी निंदा आएगी क्या स्वामी।

हाँ रुक्मिणी! चाहे जितने भी बडे क्यों न हो, यह मुशीबत न छूटेगी। यह गजानन की शाप है।

सबेरे हुआ। जब श्रीकृष्ण सभा में था, तब सत्राजित आया।

कृष्णा! तुम मेरे शमंतकमणि पर नजर डाला। उस मणि को धर्म मार्ग में हासिल न करपाने के कारण, उसे पहन कर शिकार गये मेरे भाई का वध कर उस मणि को लूट लिया।

1

धर्म देवता की साक्षी से कहता हूँ कि तुम्हारे भाई की हत्या और उस मणि के बारे में मैं नहीं जानता हूँ।

तुम्हारा शक सत्य नहीं है। दैवकल्पित इस अपवाद को मुझे झेलना ही पडेगा। तुम्हारा भाई का प्राण तो ला नहीं सकूँगा, पर तुम्हारा शमंतकमणि किस लोक में होने पर भी लाकर दूँगा।

रुक्मिणी इस अपवाद को मिटाने केलिए मैं जाना चाहता हूँ। तब तक गणेश व्रत को जारी रखना। मैं जल्दी आऊँगा।

ठीक... वैसे ही स्वामी!

श्रीकृष्ण जंगल में ढूँढते हुए गया। श्रीकृष्ण ने पहचान लिया कि जांबवान ने शमंतकमणि का संग्रह किया है। श्रीकृष्ण जांबवान के गुफा तक पहुँचा।

जांबवान... उस मणि को मुझे दो।

न दूँगा तो...

युद्ध अनिवार्य होगा...

ठीक... युद्ध ही मुझे भी पसंद है।

जांबवान समझ गया कि श्रीकृष्ण ही उन दिनों का श्रीराम है।

महात्मा! माफ कीजिए। इस मणि के साथ मेरी लडकी जांबवती को भी स्वीकार कीजिए।

सत्राजित! ये लो तुम्हारा शमंतकमणि

कृष्णा मुझे माफ करो। शमंतकमणि के साथ मेरी बेटी सत्यभामा को भी ग्रहण करो।

2

जो कोई भी भक्त साल भर में एक बार चौथी के दिन गणेश व्रत करके, चौथी के चाँद का दर्शन नहीं करेंगे, उनको निंदाओं से मुक्ति मिल कर, सुख-शांति और संपदा प्राप्त होगी। वे लोग श्रीकृष्ण की तरह ख्याती प्राप्त करेंगे।

स्वस्ति।

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

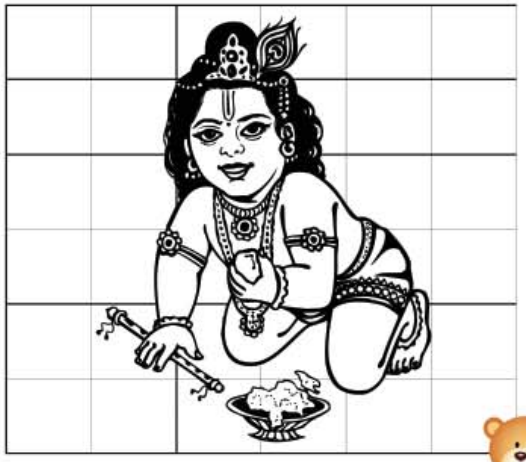

बगल में सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये-



## निम्न लिखित को मिलाएँ!

| | |
|---|---|
| 1) गणेश | अ) अनसूया |
| 2) दत्तात्रेय | आ) यशोदा |
| 3) हनुमान | इ) वकुलमाता |
| 4) श्रीकृष्ण | ई) पार्वती |
| 5) श्री वेंकटेश्वरस्वामी | उ) अंजना देवी |

1) ई 2) अ 3) उ 4) आ 5) इ

## श्री हयग्रीव मंत्र

**ज्ञानानन्द मयं देवं**
**निर्मल स्फटिकाकृतिम्।**
**आधारं सर्व विद्यानां**
**हयग्रीवं उपास्महे॥**

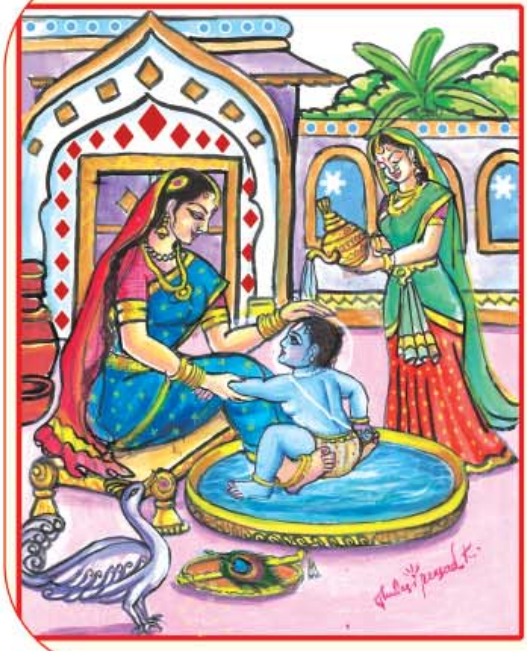



### चित्र में अंतर खोजे!

1) इमारत के शीर्ष पर एक डिजाइन
2) पेडों का गुच्छा
3) दरवाजे पर डिजाइन गायब
4) नन्हे कृष्ण पर पानी का बहाव
5) हंस का पंख
6) खिडकी में तोर
7) एक बर्तन गायब



Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

अमेरिका देश के शान फ्रान्सिस्को में ति.ति.दे. के तत्वावधान में ''श्रीनिवास कल्याण'' महोत्सव बडे धूम-दाम से संपन्न किया गया है। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. की न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी और उनकी धर्मपत्नी ने भाग लिया है।

अमेरिका देश के सीटेल प्रदेश में ति.ति.दे. के तत्वावधान में ''श्रीनिवास कल्याण'' महोत्सव बडे धूम-दाम से आयोजित किया गया है। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. की न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी और उनकी धर्मपत्नी ने भाग लिया है।

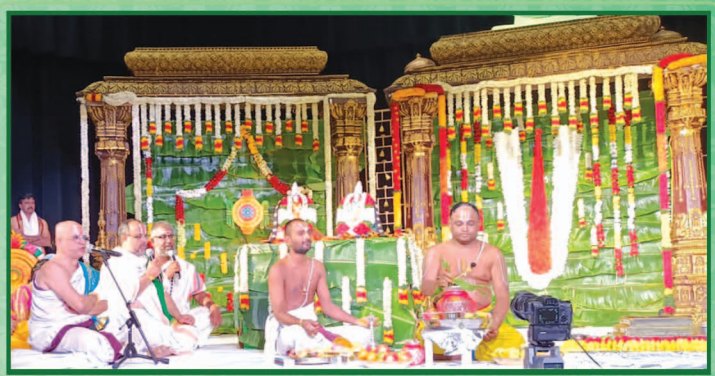

अमेरिका देश के सेंट लुइस और डल्लास् प्रांतों में ति.ति.दे. के तत्वावधान में ''श्रीनिवास कल्याण'' महोत्सव बडे धूम-दाम से संपन्न किया गया है। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. की न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी और उनकी धर्मपत्नी ने भाग लिया है।

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthnams
Printing on 25-07-2022 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2021-2023
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2021-2023"
Posting on 5th of every month.

# वरलक्ष्मीव्रत

दि. 05-08-2022